पाठ --- दुःख का अधिकार लेखक - यशपाल

प्रश्न 1 मनुष्य के जीवन में पोशाक का क्या महत्त्व है ?

उत्तर - मनुष्यों की पोशाकें उन्हें विभिन्न श्रेणियों में बाँट देती है | प्राय: पोशाक ही समाज में मनुष्य का अधिकार और दर्जा निश्चित करती है | वह हमारे लिए अनेक बंद दरवाजे खोल देती है |

प्रश्न 2 पोशाक हमारे लिए कब बंधन और अड़चन बन जाती है ?

उत्तर - जब कभी ऐसी परिस्थिति आ जाए कि हम जरा नीचे झुककर समाज की निचली श्रेणियों की अनुभूति को समझना चाहते हैं | उस समय पोशाक हमारे लिए व्यवधान बन जाती है | लेखक अपनी अच्छी पोशाक के कारण ही बूढ़ी महिला के दुःख का कारण नहीं पूछ पा रहे थे |

प्रश्न 3 लेखक उस स्त्री के रोने का कारण क्यों नहीं जान पाया ?

उत्तर - उस स्त्री का रोना देखकर लेखक के मन में एक व्यथा - सी उठी | वह उस स्त्री के रोने का कारण जानना चाहता था, पर उसकी पोशाक फुटपाथ पर महिला के समीप बैठने में व्यवधान बन रही थी | इसलिए लेखक उस स्त्री के रोने का कारण नहीं जान पाया |

प्रश्न 4 भगवाना अपने परिवार का निर्वाह कैसे करता था ?

उत्तर - भगवाना शहर के पास डेढ़ बीघा भर जमीन में कछियारी करके अपने परिवार का निर्वाह करता था | खरबूजों की डलिया बाजार में पहुँचाकर कभी लड़का सौदे पर बैठ जाता तो कभी माँ बैठ जाती | इस प्रकार जो आमदनी प्राप्त होती थी उससे भगवाना अपने परिवार का निर्वाह करता था |

प्रश्न 5 लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन बुढ़िया खरबूजे बेचने क्यों चल पड़ी ?

उत्तर - उस वृद्ध माँ की बहु को बुखार चढ़ा था | घर में कुछ भी खाने को नहीं था | अब बेटे के बिना उसे कोई भी उधार नहीं देता | इसलिए मजबूर माँ दूसरे ही दिन खरबूजे बेचने चल पड़ी |

प्रश्न 6 बुढ़िया के दुःख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद क्यों आई ?

अथवा

प्रश्न 6 लेखक ने बुढ़िया के दुःख का अंदाजा कैसे लगाया ?

उत्तर - उस पुत्र वियोगिनी के दुःख का अंदाजा लगाने के लिए लेखक अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला को याद करने लगा , जिसका एक साल पहले पुत्र मर था | वह अढ़ाई मास तक बिस्तर पर लेटी रहती, मूर्छा आने पर दो डाक्टर इलाज करते और पूरे शहर में उसके शोक की चर्चा थी , जबकि गरीब माँ को एक दिन भी दुःख मनाने का अधिकार नहीं था |

प्रश्न 7 बाजार के लोग खरबूजे बेचने वाली स्त्री के विषय में क्या कह रहे थे ? अपने शब्दों में लिखिए |

उत्तर - बाजार के लोग खरबूजे बेचने वाली स्त्री के विषय में तरह - तरह की बातें कर रहे थे | कोई उसे रिश्तों का महत्त्व न देने वाली कह रहा था तो कोई उसे 'रोटी के लिए जीने वाली' तो अन्य लोग उसे बुरी नीयत, बुरे स्वभाववाली , लोगों को पाप में डालने वाली बता रहे थे |

प्रश्न 8 पास - पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को क्या पता चला ?

उत्तर- पास - पडोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को यह पता चला कि उस महिला का तेइस साल का लड़का था, जो मुँह अँधेरे बेल से खरबूजे तोड़ रहा था कि साँप पर उसका पैर पड़ गया और साँप ने उसे डंस लिया , जिससे उसकी मृत्यु हो गई | घर में दो बच्चे और बीमार बहू है, जिनके भरण- पोषण हेतु दुखियारी माँ सौदा बेचने आई है|

प्रश्न 9 लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया माँ ने क्या - क्या उपाय किए ?

उत्तर - माँ बावली होकर ओझा को बुला लाई | झाड़ना - फूँकना हुआ , नागदेव की पूजा हुई | दान - दक्षिणा दी पर माँ लड़के को बचा न पाई |

प्रश्न 10 इस पाठ का शीर्षक 'दुःख का अधिकार' कहाँ तक सार्थक है ? स्पष्ट कीजिए|

उत्तर - इस पाठ का शीर्षक सर्वथा उचित है क्योंकि इस कहानी में लेखक ने गरीबों की मजबूरी को पूरी गहराई के साथ उजागर किया है | यह सही है कि दुःख सभी को तोड़ता है , दुःख में मातम मनाना हर कोई चाहता है पर देश में कुछ ऐसे अभागे लोग भी हैं जिन्हें न तो दुःख मनाने का अधिकार है और न अवकाश | इस कहानी को पढ़ कर ऐसा लगता है कि गम मनाने के लिए सहूलियत चाहिए |

रैदास के पद — कवि - रैदास

प्रश्न - 1 पहले पद में भगवान और भक्त की जिन - जिन चीजों से तुलना की गई है , उनका उल्लेख कीजिए |

उत्तर- पहले पद में भगवान और भक्त की अनेक चीजों से तुलना की गई है, जो निम्नलिखित है :-

भगवान	भक्त
चन्दन	पानी
घन	मोर
चंद	चकोर
दीपक	बाती
मोती	धागा
सोना	सुहागा

प्रश्न २ पहले पद की प्रत्येक पंक्ति के अंत में तुकांत शब्दों के प्रयोग से नाद सौन्दर्य आ गया है , जैसे पानी - समानी आदि | इस पद में से अन्य तुकांत शब्द छांट कर लिखिए |

उत्तर - इस पद के अन्य तुकांत शब्द हैं : -

मोरा - चकोरा, बाती - राती, धागा - सुहागा, दासा - रैदासा आदि |

प्रश्न 3 दूसरे पद में कवि ने 'गरीब निवाजू' किसे कहा है ? स्पष्ट कीजिये |

उत्तर - 'गरीब - निवाजू' शब्द का अर्थ होता है गरीबों की देखभाल करने वाला | कवि ने अपने आराध्य देव को गरीब - निवाजू कहा है क्योंकि प्रभु के कारण ही दीन व्यक्ति सामान्य रूप से अपना जीवन - यापन कर पाते हैं | ईश्वर की कृपा के कारण निम्न वर्ग के लोग समाज में उच्च स्थान प्राप्त करते हैं |

प्रश्न 4 दूसरे पद में "जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै" पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए |

उत्तर - इस पंक्ति द्वारा कवि रैदास अपने प्रभु की महानता दर्शाते हैं, क्योंकि प्रभु की कृपा दृष्टि से निम्नजाति में जन्म लेने वाला साधारण व्यक्ति भी राजा के समान प्रसिद्ध हो जाता है | उसका सम्मान समाज का हर वर्ग करता है | अत: प्रभु करुणा और ममता की मूर्ति हैं , जो अपने भक्तों का उद्धार करते हैं |

प्रश्न 5 रैदास ने अपने स्वामी को किन - किन नामों से पुकारा है ?

उत्तर - रैदास ने अपने स्वामी को लाल , गरीब निवाजू , गुसईया , गोबिंदु , हरिजीउ आदि नामों से पुकारा है |

प्रश्न 6 रैदास के इन पदों का केंद्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए |

उत्तर - कवि रैदास ने पहले पद में अपने आराध्य को याद करते हुए उनसे अपनी तुलना की है | उनका प्रभु बाहर किसी मन्दिर - मस्जिद में नहीं विराजता अपितु उनके हृदय में सदैव विद्यमान रहता है | कवि अपने प्रभु के गुणों से अत्यधिक प्रभावित हैं और उन जैसा बनना चाहते हैं | दूसरे पद में कवि ने भगवान की अपार उदारता , कृपा और समदर्शी स्वभाव का वर्णन किया है, जिसकी कृपादृष्टि से निम्न जाति में जन्में व्यक्ति भी संत शिरोमणि बने जाते हैं |

पाठ - गिल्लू लेखिका - महादेवी वर्मा

प्रश्न 1 सोनजुही में लगी पीली कली को देखकर लेखिका के मन में कौन - से विचार उमड़ने लगे ?

उत्तर - सोनजुही में लगी पीली कली को देख कर लेखिका को अपने पालतू जीव गिल्लू की याद आई , जो इस लता की सघन हरीतिमा में छिपकर बैठता था और अकसर कूदकर उन्हें चौंका देता था | आज भी उसकी मृत्यु उपरांत उन्हें चौंकाने आया है |

प्रश्न 2 पाठ के आधार पर कौए को एक साथ समादरित और अनादरित प्राणी क्यों कहा गया है ?

उत्तर - लेखिका ने पाठ में कौए को आदर का पात्र तब बताया , जब श्राद्ध - पक्ष में भारतीय संस्कृति के अनुरूप हम हमारे पूर्वजों को याद करके उसे भोजन देते हैं और जब वह अपनी आवाज से किसी प्रिय के आने की सूचना देता है तब वह समादरित प्राणी बनता है | अन्य दिवसों में उसकी कर्कश ध्वनि और खान - पान की गंदी आदतों से यह प्राणी अनादरित ही रहता है |

प्रश्न 3 गिलहरी के घायल बच्चे का उपचार किस प्रकार किया गया ?

उत्तर - दो कौओं की चोंच के दो घाव से गिलहरी का बच्चा घायल हो गया था | लेखिका उसे हौले से उठाकर कमरे में लाई फिर रुई से रक्त पौंछ कर घावों पर पेंसिलिन का मरहम लगाया और उसे रुई की बत्ती से दूध पिलाने का प्रयास किया परन्तु यह सम्भव न हुआ | बड़ी मुश्किल से वे उसके मुंह में पानी टपकाने में सफल हुईं | इस प्रकार उपचार करने पर तीन दिन में गिलहरी का घायल बच्चा ठीक हो गया |

प्रश्न 4 लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू क्या करता था ?

उत्तर - लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू कभी उनके पैरों तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेजी से नीचे उतर जाता | उसका यह दौड़ने का क्रम तब तक चलता रहता जब तक लेखिका उसे पकड़ने के लिए न दौड़तीं |

प्रश्न 5 गिल्लू को मुक्त करने की आवश्यकता क्यों समझी गई और उसके लिए लेखिका ने क्या प्रयास किया ?

उत्तर - जब गिल्लू के जीवन में प्रथम वसंत आया और कमरे के बाहर से गिलहरियाँ उसको देखकर चिक - चिक करने लगी | तब लेखिका को लगा कि उसे मुक्त करना आवश्यक है अत: उन्होंने खिड़की की जाली का एक कौना खोलकर गिल्लू के आने - जाने की जगह बना दी | जिससे गिल्लू प्रसन्न होकर अपनी स्वजाति में विचरता और शाम होते ही पुनः वापस आ जाता था |

प्रश्न 6 गिल्लू किन अर्थों में परिचारिका की भूमिका निभा रहा था ?

उत्तर - जब लेखिका अस्पताल से घर आई तब गिल्लू उनके सिरहाने बैठकर अपने नन्हें पंजों से उसके बाल सहलाता जो लेखिका को बहुत अच्छा लगता था | गिल्लू का हटना किसी परिचारिका के हटने के समान लगता था |

प्रश्न 7 गिल्लू की किन चेष्टाओं से यह आभास मिलने लगा था कि उसका अंत समय समीप है ?

उत्तर - गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती अत: गिल्लू की जीवन - यात्रा का अंत आ ही गया | दिन-भर न उसने कुछ खाया न बाहर गया | रात में अंत की यातना में वह लेखिका के बिस्तर पर आया और उसने वहीं ऊँगली पकड़ ली जिसे बचपन में पकड़ा था | शरीर उसका ठंडा होने लगा | लेखिका ने हीटर जलाकर उसे गर्मी देने का प्रयास किया | इन सब चेष्टाओं से यह आभास मिलने लगा कि गिल्लू का अंत समय आ गया है |

प्रश्न 8 'प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जगाने के लिए सो गया |'- का आशय स्पष्ट कीजिए |

उत्तर - प्रस्तुत पंक्ति द्वारा लेखिका जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करना चाहती हैं कि जो व्यक्ति जन्म लेता है उसकी मृत्यु भी निश्चित है | अत: गिल्लू भी अपना गिलहरी का जीवन त्याग कर नए जीवन की यात्रा पर नए जीवन के लिए चल पड़ा |

प्रश्न 9 सोनजुही की लता के नीचे बनी गिल्लू की समाधि से लेखिका के मन में किस विश्वास का जन्म होता है ?

उत्तर - सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गई क्योंकि यह लता उसे अत्यधिक प्रिय थी | लेखिका भारतीय चिर - पुरातन संस्कृति से जुड़ी हैं | उन्हें यह विश्वास था कि वह पुनः जन्म लेकर लेखिका को चौंकाने अवश्य आएगा |

DPG

अनुस्वार और अनुनासिक

अनुस्वार

अनु + स्वर अर्थात् स्वर के बाद आने वाला | वास्तव में इसका प्रयोग शब्द के आरंभ में न आकर मध्य या अंत में होता है यह नासिक्य ध्वनि है तथा इसका लिपि चिन्ह (ं) है |

उच्चारण में इसके विभन्न रूप होते हैं, परन्तु लेखन (writing) में इसे (ं) वर्ण पर लगने वाले बिंदु के द्वारा ही प्रकट किया जाता है |

नासिक्य ध्वनियाँ -

कुछ वर्णों का उच्चारण नाक से किया जाता है उन्हीं वर्णों को नासिक्य ध्वनियाँ कहतें हैं | जैसे

– ङ् , ञ् , ण् , न् , म्

('क' वर्ग) - क् , ख् , ग् , घ् , ङ्

('च' वर्ग) - च् , छ् , ज् , झ् , ञ्

('ट' वर्ग) - ट् , ठ् , ड , ढ् , ण्

('त' वर्ग) - त् , थ् , द् , ध् , न्

('प' वर्ग) - प् , फ् , ब् , भ् , म्

इन सभी वर्गों का अंतिम व्यंजन नासिक्य ध्वनि है | ये ही ध्वनियाँ शब्द के मध्य या अंत में आकर अनुस्वार (ं) का कार्य करती हैं |

नोट – क् से लेकर ङ् तक के सभी वर्ण 'क' वर्ग में आते हैं | इसी प्रकार ऊपर लिखे हुए सभी वर्ण 'क' वर्ग , 'च' वर्ग , 'ट' वर्ग , 'त' वर्ग तथा 'प' वर्ग कहे जाते हैं |

पंचमाक्षर - (ङ् , ञ् , ण् , न् , म्) 5th position

शब्द के मध्य में अनुस्वार की स्थिति –

शब्द के मध्य में अनुस्वार विभिन्न स्थितियों में हो सकता है –

1. यदि स्वर रहित पंचम वर्ण (ङ् , ञ् , ण् , न् , म्) के बाद उसी वर्ग का कोई व्यंजन आए, तो लेखन में पंचम वर्ण के स्थान पर अनुस्वार का ही प्रयोग होता है, किन्तु उच्चारण में वह पंचमाक्षर की ध्वनि से ही उच्चारित होगा |

इसे समझने के लिए कुछ उदाहरण देखते हैं –

गंगा - ग ङ् गा (~~गन्गा~~)

चंचल - च ञ्चल (~~चन्चल~~)

'गंगा' शब्द में अनुस्वार के बाद वाला व्यंजन 'ग' है और 'ग' 'क' वर्ग का व्यंजन है इसीलिए इसमें 'क' वर्ग के पंचमाक्षर (ङ्) का प्रयोग हुआ है ।

इसके अलावा चंचल शब्द में अनुस्वार के बाद वाला व्यंजन 'च' है और यह 'च' वर्ग का है| इसीलिए इसमें 'च' वर्ग के पंचमाक्षर (ञ) का प्रयोग हुआ है |

कुछ अन्य इसी प्रकार के उदाहरण देखिये-

घंटा - घण्टा - ट वर्ग के अंतिम वर्ण 'ण्' का प्रयोग
दंत – दन्त – त वर्ग के अंतिम वर्ण 'न्' का प्रयोग
पंप – पम्प – प वर्ग के अन्तिम वर्ण 'म्' का प्रयोग

इन सभी में भी पंचमाक्षर का प्रयोग (नासिक्य ध्वनि) अनुस्वार के रूप में हुआ है |

2. ऊष्म व्यंजन – जो 'श ,ष, स, ह' होते हैं उनसे पूर्ण अनुस्वार का ही प्रयोग होता है अर्थात् जिस वर्ण पर अनुस्वार (ं) लगा होता है उसका अगला वर्ण यदि 'श ,ष, स, ह' में से कोई होगा तो अनुस्वार – अनुस्वार ही बना रहता है | वह किसी भी आधे व्यंजन में परिवर्तित नहीं होता | जैसे –

वंश, हंस, संहार आदि शब्द हैं जिनमें अनुस्वार से अगले वर्ण क्रमशः श, स, और ह हैं

इसलिए यहाँ शब्द में अनुस्वार (ं) की स्थिति में ही बना रहता है|

3. सम् उपसर्ग के बाद अन्तस्थ (य, र, ल, व) या ऊष्म व्यंजन आए तो निश्चित रूप से म् के स्थान पर अनुस्वार ही आयेगा| जैसे –

सम् + सार = संसार
सम् + वाद = संवाद

शब्द के अंत में अनुस्वार की स्थिति – कई बार शब्द के अंत में 'म' आने पर उसे भी अनुस्वार के रूप में लिखा जाता है | जैसे –

स्वयं , अहं

अनुनासिक

जिन स्वरों के उच्चारण में मुख के साथ - साथ नासिका की भी सहायता लेनी पड़ती है| अर्थात् जिन स्वरों का उच्चारण मुख और नासिका दोनों से किया जाता है वे अनुनासिक कहलाते हैं |

इनका चिह्न चन्द्रबिन्दु (ँ) है |

इन सभी शब्दों में अनुनासिक लगाया गया है |

अनुनासिक के स्थान पर अनुस्वार (बिंदु) का प्रयोग – जिन स्वरों में शिरोरेखा के ऊपर मात्रा – चिह्न आते हैं, वहाँ अनुनासिक के लिए जगह की कमी के कारण अनुस्वार बिंदु लगाया जाता है | जैसे –

Note- शब्द के ऊपर खींची जाने वाली लाइन शिरोरेखा कहलाती है |

इस नियम को उदाहरणों के माध्यम से समझेंगे

नहीँ - नहीं

मैँ - मैं

गोँद - गोंद

इन सभी शब्दों में जैसा कि हम देख रहे हैं कि शिरोरेखा से ऊपर मात्रा-चिह्न लगे हुए हैं - जैसे 'नहीं' में ई, 'मैं' में ऐ तथा 'गोंद' में ओ की मात्रा का चिह्न |

इन चिह्नों पर जब हम अनुनासिक का चिह्न लगा रहे हैं तो पाते हैं उनके लिए पर्याप्त स्थान नहीं है इसीलिए इन सभी मात्राओं के साथ अनुनासिक के स्थान पर अनुस्वार लगाया गया है | इससे उच्चारण में किसी प्रकार का अंतर नहीं आता |

विशेष ध्यान देने योग्य बातें – निम्नलिखित स्थितियों में अनुस्वार का प्रयोग नहीं होता:

1. जिन शब्दों में भिन्न नासिक्य व्यंजन संयुक्त होते हैं या पंचमाक्षर 'दवित्व' होता है, वहाँ अनुस्वार का प्रयोग नहीं होता :

जैसे – वाङ्मय , जन्म , सम्मान आदि

पहले शब्द 'वाङ्मय' में भिन्न नासिक्य व्यंजन 'ङ् और म्' एक साथ आए हैं|

इसी प्रकार 'जन्म' में भी दो भिन्न संयुक्त नासिक्य एक साथ आए हैं, जबकि सम्मान में पंचमाक्षर का द्वित्व है अर्थात नासिक्य व्यंजन है तो एक ही परन्तु 'म्म' द्वित्व है

अत: इन सभी शब्दों में अनुस्वार का प्रयोग नहीं किया गया |

2. यदि पंचम वर्ण य, व, ह, से पूर्व आता है, तो उसका अनुस्वार रूप नहीं होता |

जैसे - पुण्य , समन्वय , तुम्हें आदि

इन सभी शब्दों में पंचमाक्षर 'ण्' 'न्' तथा 'म्' के पश्चात् 'य', 'व' तथा ह का प्रयोग हुआ है इसलिए यहाँ अनुस्वार का प्रयोग नहीं किया गया |

पाठ - एवरेस्ट मेरी शिखर यात्रा लेखिका - बचेंद्री पाल

प्रश्न 1 नजदीक से एवरेस्ट को देखकर लेखिका को कैसा लगा ?

उत्तर - एवरेस्ट शिखर को लेखिका ने पहले दो बार देखा था लेकिन एक दूरी से | बैस कैंप पहुँचने पर उन्होंने पहली बार नज़दीक से एवरेस्ट को देखा , वह भौचक्की होकर बर्फ़ीली टेडी - मेढ़ी नदी को निहारती रही |

प्रश्न 2 डॉ. मीनू मेहता ने क्या जानकारी दी ?

उत्तर - डॉ. मीनू मेहता ने पूरे दल को अल्यूमिनियम की सीढ़ियों से अस्थाई पुलों का बनाना , लट्ठों और रस्सियों का उपयोग , बर्फ की आड़ी - तिरछी दीवारों पर रस्सियों को बांधना और अग्रिम दल के अभियांत्रिकी कार्यों के बारे में बताया |

प्रश्न 3 तेनजिंग ने लेखिका की तारीफ़ में क्या कहा ?

उत्तर -जब लेखिका ने अपने आपको नौसिखिया बताया तब तेनजिंग ने उनके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, "तुम एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो , तुम्हें तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए |"

प्रश्न 4 लेखिका को किनके साथ चढ़ाई करनी थी ?

उत्तर - लेखिका को की , जय और डॉ.मीनू मेहता के साथ चढ़ाई करनी थी |

प्रश्न 5 लोपसांग ने तंबू का रास्ता कैसे साफ़ किया ?

उत्तर - लोपसांग ने अपनी स्विच छुरी की मदद से तंबू का रास्ता साफ़ किया और लेखिका को बर्फ़ की कब्र से बाहर निकाला |

प्रश्न 6 साउथ कोल कैंप पहुँचकर लेखिका ने अगले दिन की महत्त्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी कैसे शुरू की ?

उत्तर - जैसे ही लेखिका साउथ कोल कैम्प पहुँची उन्होंने अगले दिन की महत्त्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी शुरू कर दी | उन्होंने खाना , कुकिंग गैस तथा कुछ आक्सीजन सिलिंडर जमा किये |

प्रश्न 7 उपनेता प्रेमचन्द ने किन स्थितियाँ से अवगत कराया ?

उत्तर - उपनेता प्रेमचन्द जो अग्रिम दल का नेतृत्व कर रहे थे | उन्होंने बताया कि कैंप - एक तक का रास्ता साफ़ कर दिया गया है | पुल बना कर , रस्सियाँ बाँध कर तथा झंडियों से रास्ता

भी चिन्हित कर सभी बड़ी कठिनाईयों का जायजा ले लिया गया है | ग्लेशियर बर्फ़ की नदी है और बर्फ़ का गिरना अभी जारी है | हिमपात के कारण किये गए प्रयास व्यर्थ भी हो सकते हैं और उनके दल को रास्ता खोलने का कार्य दोबारा करना पड़ सकता है |

प्रश्न 8 हिमपात किस तरह होता है ? और उसमें क्या - क्या परिवर्तन आते हैं ?
उत्तर - हिमपात अपने आप में एक तरह के बर्फ़ के खंडों का अव्यवस्थित ढंग से गिरना ही होता है | जिसके कारण अक्सर बर्फ़ में हलचल होती है और बड़ी - बड़ी बर्फ़ की चट्टाने तत्काल गिर जाया करती है |

प्रश्न 9 लेखिका के तंबू में गिरे बर्फ़ के पिंड का वर्णन किस प्रकार किया गया है ?
उत्तर - लेखिका गहरी नींद में सो रही थी कि रात में 12:30 बजे के लगभग एक सख्त चीज के टकराने से अचानक उनकी नींद खुल गई और जोरदार धमाका हुआ | भारी - सी कोई चीज शरीर को कुचलती हुई निकल गई | लेखिका को साँस लेने में कठिनाई होती थी | जिसके कारण पूरा कैंप तहस - नहस हो गया | वास्तव में हर व्यक्ति को चोट लगी पर किसी की भी मृत्यु नहीं हुई थी |

प्रश्न 10 लेखिका को देखकर 'की' हक्का - बक्का क्यों रह गया ?

अथवा

प्रश्न 10 सम्मिलित अभियान में सहयोग एवं सहायता एवं सहायता की भावना का परिचय बचेंद्री के किस कार्य से मिलता है ?
उत्तर - सम्मिलित अभियान में सहयोग एवं सहायता की भावना का परिचय बचेंद्री के व्यवहार से तब मिला जब वह ऊपर चढ़कर पुनः नीचे उतरी और अपने सहयोगियों के विषय में उन्होंने खबर ली | तेज बर्फ़ीली हवा में जय , मीनू मेहता के बाद जब वह 'की' से मिली तो वह हक्का - बक्का रह गया | तब लेखिका ने बताया कि वह एक पर्वतारोही है और एक दल के समान उन्हें चलना है | इससे लेखिका की सहयोग की भावना का पता चलता है |

प्रश्न 11 एवरेस्ट पर चढ़ने के लिए कुल कितने कैंप बनाए गए , उनका वर्णन कीजिए |
उत्तर - एवरेस्ट पर चढ़ने के लिए निम्नलिखित कैंप बनाए गए :-
1 - बेस कैंप -- यहाँ से सर्वप्रथम नजदीक से हिमालय पर्वत को लेखिका ने निहारा था |
2 - कैंप एक - {6000 मीटर } जहाँ लेखिका ने रीता गोम्बू के साथ चढ़ाई करने का अभ्यास किया |
3 - कैंप चार -- 29 अप्रैल को 7900 मीटर पर कैंप चार लगाया था |

4 - कैंप तीन - 15-16 मई 1984 को इस कैंप में लेखिका के सिर से सख्त चीज़ टकराई थी |
5 - कैंप दो -- 16 मई को प्रात: 8 बजे तक सब सुरक्षित यहाँ पहुँच गए थे |
6 - साउथ कोल कैंप - यहाँ से महत्त्वपूर्ण चढ़ाई की शुरुआत करनी थी |
7 - शिखर कोल कैंप -दो घंटे से कम समय में लेखिका अंगदोरजी के साथ यहाँ पहुँच गई थी |

प्रश्न 12 चढ़ाई के समय एवरेस्ट की चोटी की स्थिति कैसी थी ?

उत्तर - चढ़ाई के समय एवरेस्ट की चोटी शंकु आकार की थी | दक्षिणी शिखर के ऊपर हवा की गति बढ़ गई थी | भुरभुरे बर्फ़ के कणों से दृश्यता शून्य तक थी | एवरेस्ट चोटी शंकु आकार की होने के कारण दो लोग खड़े रह सकें , इतनी जगह वहां नहीं थी , अत: फावड़े द्वारा खुदाई करके लेखिका ने उस जगह को समतल करके सुरक्षित स्थान बनाया |

DPSG

रहीम के दोहे कवि - रहीमदास

प्रश्न 1 प्रेम का धागा टूटने पर पहले की भाँति क्यों नहीं हो पाता ?

उत्तर - प्रेम का धागा भावनाओं पर आधारित होता है और अगर उसमें कटुता आ जाए तो वह पहले की भाँति मधुर नहीं रहता है अत: कवि ने ऐसे रिश्तों को धागे के समान बताया है जो टूटने पर गाँठ द्वारा ही जुड़ता है अत: इन रिश्तों को निभाते समय धैर्य एवं सहनशीलता का होना आवश्यक है |

प्रश्न 2 हमें अपना दुःख दूसरों पर क्यों नहीं प्रकट करना चाहिए ? अपने मन की व्यथा दूसरों से कहने पर उनका व्यवहार कैसा हो जाता है ?

उत्तर - हमें अपना दुःख दूसरों पर इसलिए प्रकट नहीं करना चाहिए, वह अत्यधिक रस लेकर हमारा दुःख सुनेंगे पर उसे कम नहीं कर पायेंगे क्योंकि हमारी परेशानी और दुःख हमें ही दूर करने पड़ते हैं | जब हम अपना दुःख दूसरों को बताते हैं तो उनका व्यवहार बदल जाता है | वह हमारा मजाक उड़ाते हैं |

प्रश्न 3 रहीम ने सागर की अपेक्षा पंक जल को धनी क्यों कहा है ?

उत्तर-सागर का जल अथाह होने पर भी अपने खारेपन के कारण किसी की प्यास नहीं बुझा सकता जबकि आकार में लघु होने पर भी पंक जल पास रहने वाले जीव - जंतुओं की प्यास बुझाने में सक्षम होता है | इस दोहे के माध्यम से कवि रहीम गुणों को महत्त्व देते हैं , आकार को नहीं |

प्रश्न 4 एक को साधने से सब कैसे सध जाते हैं ?

उत्तर-इस पंक्ति द्वारा कवि एकेश्वरवाद को महत्त्व दे रहे हैं| जिस प्रकार पेड़ की जड़ को सींचने से पूरा पेड़ हरा - भरा हो जाता है | उसी प्रकार एक ही ईश्वर को तन - मन से पूजने पर सारा जीवन सफल हो जाता है |

प्रश्न 5 जलहीन कमल की रक्षा सूर्य भी क्यों नहीं कर पाता ?

उत्तर-जल ही कमल की सम्पत्ति है और जल के अभाव में कमल मुर्झा जाता है | सूर्य को ऊष्मा या तेज का प्रतीक मानते हैं परन्तु उसकी ऊष्मा कमल की रक्षा नहीं कर पाती क्योंकि कमल का जीवन जल पर ही निर्भर है |

प्रश्न 6 अवध नरेश को चित्रकूट क्यों जाना पड़ा ?

उत्तर-अवध नरेश को अपनी माँ की आज्ञा पूर्ण करने हेतु वनवास जाना पड़ा , जहाँ कुछ समय वह चित्रकूट में रहें | उनके रहने से वन का वातावरण पावन एवं पवित्र हो गया |

प्रश्न 7 'नट' किस कला में सिद्ध होने के कारण ऊपर चढ़ जाता है ?

उत्तर- नट अपने भारी भरकम शरीर को सिकोड़ने की कला में सिद्ध होने के कारण वह आसानी से ऊपर चढ़ जाता है |

प्रश्न 8 'मोती , मानुष, चून' के सन्दर्भ में पानी के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए |

उत्तर- मोती, मानुष, चून के सन्दर्भ में पानी का बहुत महत्त्व है | मोती के सन्दर्भ में पानी का अर्थ उसकी चमक से है | मोती में जीतनी चमक हूगी उसका मूल्य उतना ज्यादा होगा | मनुष्य के सन्दर्भ में पानी का अर्थ उसके मान सम्मान से है |बिना मान सम्मान के मनुष्य की समाज में कोई इज्जत नहीं है | ऐसा मनुष्य पशु समान माना जाता है | चून अर्थात आटा या चूना और दोनों का प्रयोग पानी मिलाकर ही किया जाता है अत; तीनों के जीवन हेतु पानी अनमोल है |

DRSG

प्र 1. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त उपसर्ग पृथक कर लिखिए : -

1. दुरुपयोग
2. संपादक
3. प्रत्येक
4. अपवित्र
5. अनुभव
6. आचरण
7. अनियमित
8. अनुकूल
9. बेजोड़
10. संक्षिप्त
11. आकर्षण
12. संपन्न
13. अनवरत
14. निर्मल
15. अनुवाद

उत्तर:

1. दुर्
2. सम्
3. प्रति
4. अ
5. अनु

6. आ
7. अ
8. अनु
9. बे
10. सम्
11. आ
12. सम्
13. अन
14. निर्
15. अनु

प्र. 2 निम्नलिखित शब्दों से मूल शब्द एवं प्रत्यय पृथक कीजिए : -

1. औद्योगिक …….. …….
2. क्रोधित …….. …….
3. वास्तविक …….. …….
4. पढ़ाकू …….. …….
5. अंकित …….. …….
6. चिकनाहट …….. …….
7. मिलान …….. …….
8. लिखावट …….. …….
9. आर्थिक …….. …….
10. प्रसन्नता …….. …….
11. समर्पित …….. …….

12. पहाड़ी …….. ……
13. प्रतिष्ठित …….. ……
14. सपेरा …….. ……
15. कालिमा …….. ……
16. कृपालु …….. ……
17. आनंदित …….. ……
18. सौदागर …….. ……
19. नैतिक …….. ……
20. बहाव …….. ……

उत्तर:

1. उद्योग + इक
2. क्रोध + इत
3. वास्तव + इक
4. पढ़ + आकू
5. अंक + इत
6. चिकना + आहट
7. मिल + आन
8. लिख + आवट
9. अर्थ + इक
10. प्रसन्न + ता
11. समर्पण + इत
12. पहाड़ + ई
13. प्रतिष्ठा + इत

14. साँप + एरा
15. काला + इमा
16. कृपा + आलु
17. आनंद + इत
18. सौदा + गर
19. नीति + इक
20. बह + आव

अपठित गद्यांश

2. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

गंगा भारत की एक अत्यन्त पवित्र नदी है जिसका जल काफ़ी दिनों तक रखने के बावजूद अशुद्ध नहीं होता जबकि साधारण जल कुछ दिनों में ही सड़ जाता है। गंगा का उद्गम स्थल गंगोत्री या गोमुख है। गोमुख से भागीरथी नदी निकलती है और देवप्रयाग नामक स्थान पर अलकनंदा नदी से मिलकर आगे गंगा के रूप में प्रवाहित होती है। भागीरथी के देवप्रयाग तक आते-आते इसमें कुछ चट्टानें घुल जाती हैं जिससे इसके जल में ऐसी क्षमता पैदा हो जाती है जो उसके पानी को सड़ने नहीं देती।

हर नदी के जल में कुछ खास तरह के पदार्थ घुले रहते हैं जो उसकी विशिष्ट जैविक संरचना के लिए उत्तरदायी होते हैं। ये घुले हुए पदार्थ पानी में कुछ खास तरह के बैक्टीरिया को पनपने देते हैं तो कुछ को नहीं। कुछ खास तरह के बैक्टीरिया ही पानी की सड़न के लिए उत्तरदायी होते हैं तो कुछ पानी में सड़न पैदा करने वाले कीटाणुओं को रोकने में सहायक होते हैं। वैज्ञानिक शोधों से पता चलता है कि गंगा के पानी में भी ऐसे बैक्टीरिया हैं जो गंगा के पानी में सड़न पैदा करने वाले कीटाणुओं को पनपने ही नहीं देते इसलिए गंगा का पानी काफ़ी लंबे समय तक खराब नहीं होता और पवित्र माना जाता

हमारा मन भी गंगा के पानी की तरह ही होना चाहिए तभी वह निर्मल माना जाएगा। जिस प्रकार पानी को सड़ने से रोकने के लिए उसमें उपयोगी बैक्टीरिया की उपस्थिति अनिवार्य है उसी प्रकार मन में विचारों के प्रदूषण को रोकने के लिए सकारात्मक विचारों के निरंतर प्रवाह की भी आवश्यकता है। हम अपने मन को सकारात्मक विचार रूपी बैक्टीरिया द्वारा आप्लावित करके ही गलत विचारों को प्रविष्ट होने से रोक सकते हैं। जब भी कोई नकारात्मक विचार उत्पन्न हो सकारात्मक विचार द्वारा उसे समाप्त कर दीजिए।

प्रश्न

(क) गंगा के जल और साधारण पानी में क्या अंतर है?

(ख) गंगा के उद्गम स्थल को किस नाम से जाना जाता है? इस नदी को गंगा नाम कैसे मिलता है?

(ग) भागीरथी से देव प्रयाग तक का सफ़र गंगा के लिए किस तरह लाभदायी सिद्ध होता है?

(घ) बैक्टीरिया ही पानी में सड़न पैदा करते हैं और बैक्टीरिया ही पानी की सड़न रोकते हैं, कैसे? स्पष्ट कीजिए।

(ङ) मन को निर्मल रखने के लिए क्या उपाय बताया गया है?

(च) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

उत्तर :

(क) गंगा का जल पवित्र माना जाता है। यह काफी दिनों तक रखने के बाद भी अशुद्ध नहीं होता है। इसके विपरीत साधारण जल कुछ ही दिन में खराब हो जाता है।

(ख) गंगा के उद्गम स्थल को गंगोत्री या गोमुख के नाम से जाना जाता है। वहाँ यह भागीरथी नाम से निकलती है। देवप्रयाग मेंयह अलकनंदा से मिलती है तब इसे गंगा नाम मिलता है।

(ग) भागीरथी से देवप्रयाग तक गंगा विभिन्न पहाड़ों के बीच बहती है जिससे इसमें कुछ चट्टानें धुल जाती हैं। इससे गंगा का जल दीर्घ काल तक सड़ने से बचा रहता है। इस तरह यह सफ़र गंगा के लिए लाभदायी सिद्ध होता है।

(घ) कुछ खास किस्म के बैक्टीरिया ऐसे होते हैं जो पानी में सड़न पैदा करते हैं और कुछ बैक्टीरिया इन बैक्टीरिया को रोकने का काम करते हैं। गंगा के पानी में सड़न रोकने वाले बैक्टीरिया इनको पनपने से रोककर पानी सड़ने से बचाते हैं।

(ङ) मन को निर्मल रखने के लिए विचारों का प्रदूषण रोकना चाहिए। इसके लिए मन में सकारात्मक विचार प्रवाहित होना चाहिए। मन में नकारात्मक विचार आते ही उसे सकारात्मक विचारों द्वारा नष्ट कर देना चाहिए।

(च) उत्तर छात्र स्वयं लिखेंगे।

शब्द और पद

शब्द

वर्णों के सार्थक, स्वतंत्र ध्वनि-समूह को शब्द कहते
हैं | शब्द शब्दकोश में पाए जाते हैं |

जैसे - मधुर, पढ़ना, पुस्तक, देश आदि |

शब्द की विशेषताएँ

1- शब्द का एक निश्चित अर्थ होता है।
2-शब्द ध्वनियों और वर्णों का समूह है।
3-शब्द का अस्तित्व स्वतन्त्र होता है।
4-सार्थक शब्दों से ही हम अपने विचारों की अभिव्यक्ति दे सकते है।
5-शब्द भाषा का वैभव है।

शब्द-भेद

स्रोत के आधार पर (तत्सम,तद्भव, देशज, विदेशी)
रचना के आधार पर (रूढ़, यौगिक, योगरूढ़)
अर्थ के आधार पर (समानार्थी, एकार्थी, अनेकार्थी)

पद

वाक्य में प्रयुक्त होने पर इन शब्दों का अस्तित्व स्वतंत्र न रहकर वाक्य के लिंग, वचन, कारक और क्रिया के नियमों से अनुशासित हो जाता है | व्याकरण के नियमों में बँधने से यह शब्द, शब्द न रहकर पद बन जाते हैं |

बालक - एक शब्द है |

बालक खेल रहा है | प्रयुक्त वाक्य में 'बालक' शब्द अपना स्वतंत्र अस्तित्व को खोकर कर पद बन गया
है |

पद-भेद

विकारी (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया)
अविकारी (क्रियाविशेषण, संबंध बोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक)

नोट : -

पद कहलाने के लिए शब्द को वाक्य का हिस्सा बनना पड़ता है और लिंग, वचन, कारक, क्रिया, काल आदि उस पर प्रभाव डालते हैं, जैसे : 'कक्षा' एक शब्द है लेकिन वाक्य में प्रयोग होने पर उसे अन्य व्याकरणिक इकाइयों का सहारा लेना पड़ता है,

जैसे :- मैं दसवीं **कक्षा** की छात्रा हूँ | इस वाक्य में 'कक्षा' शब्द व्याकरणिक नियमों में बँधने के कारण पद बन गया है |

शब्द व पद में अंतर

शब्द	पद
1. शब्द वर्णों की स्वतंत्र एवं सार्थक इकाई है।	1. पद वाक्य में प्रयुक्त शब्द है।
2. शब्द का मात्र अर्थ परिचय	2. पद का व्याकरणिक परिचय होता है।

3. शब्द सार्थक और निरर्थक दोनों होते हैं।	3. पद वाक्य में अर्थ का संकेत देता है।
4. शब्द का लिंग, वचन, कारक तथा क्रिया से कोई सम्बन्ध नहीं होता।	4. पद का लिंग, वचन, कारक तथा क्रिया से सम्बन्ध होता है।

अभ्यास कार्य

प्रश्न 1. शब्द किसे कहते हैं?
प्रश्न 2. पद किसे कहते हैं ?
प्रश्न 3. उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए कि शब्द और पद में क्या अंतर है ?
प्रश्न 4. वाक्य में प्रयुक्त होने पर शब्द क्या कहलाता है ? उदाहरण सहित बताइए |
प्रश्न 5. शब्द पद का रूप कब लेता है ?

नारा लेखन

किसी विशेष सिद्धांत, पक्ष या दल आदि का वह लयबद्ध, विशेषता
वर्णित करने वाला तथा तुकांत युक्त विचार जो लोगों को अपनी ओर
आकृष्ट करने के लिए लिखा या बोला जाए |

Made with KINEMASTER

लेखन कैसे करें |

* सीमा रेखा बनाना |
* विषय से सम्बद्धता |
* सटीक😎 विशेषता का वर्णन |
* मौलिकता
* आकर्षण
* लय तथा तुकांत शब्दों का प्रयोग |

नारा लेखन के अनेक रूप हैं | जैसे - राजनीतिक , धार्मिक,सामाजिक,बोधनात्मक , उत्साहदायक , व्यावसायिक आध्यात्मिक ,प्रेरक नारा इत्यादि |

CORONAVIRUS

कोरोना को हराना है,

हाथ नहीं किसी से मिलना है।

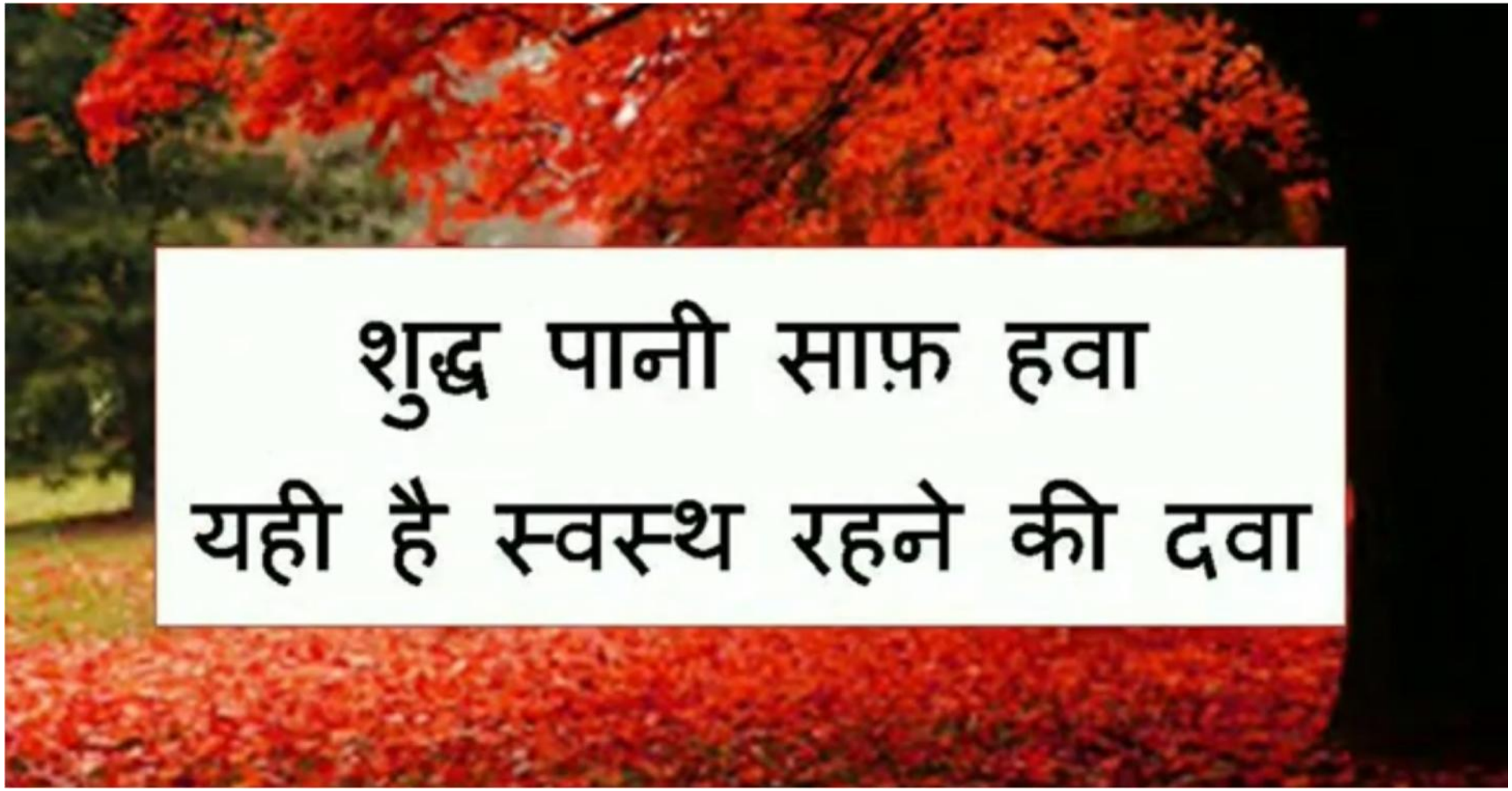
शुद्ध पानी साफ़ हवा
यही है स्वस्थ रहने की दवा

LOCK
DOWN
#STAYHOME
लॉक डाउन को सफल बनाना है,
देश हित में यह कदम उठाना है।

प्रश्नोत्तर

तुम कब जाओगे , अतिथि — लेखक - शरद जोशी

प्रश्न 1 लेखक अतिथि को कैसी विदाई देना चाहता था ?

उत्तर - लेखक अतिथि को भावभीनी विदाई देना चाहता था | वह चाहता था कि उसका अतिथि एक दिन की शानदार मेहमाननवाजी की छाप अपने हृदय में लेकर विदा हो जाए ताकि आतिथ्य की ऊष्मा बरकरार रहे |

प्रश्न 2 "अंदर ही अंदर कही मेरा बटुआ काँप गया" - कथन की व्याख्या कीजिए |

उत्तर - लेखक शरद जोशी इस कथन द्वारा मध्यमवर्गीय मनुष्यों की आर्थिक स्थिति एवं मनोदशा का वर्णन प्रस्तुत कर रहे हैं | वह अतिथि को देखकर मुस्कुरा रहे थे , परन्तु अंदर ही अंदर उनका बटुआ काँप रहा था क्योंकि आने वाले खर्चे को देखकर वह परेशान थे | लेखक का यह कथन भावी खर्चे को देखकर परेशान मेज़बान की मनोदशा को प्रस्तुत करने में सक्षम है |

प्रश्न 3 कौन–सा आघात अप्रत्याशित था और उसका लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर - तीसरे दिन जब अतिथि ने धोबी से कपड़े धुलवाने की इच्छा प्रकट की तो लेखक को अप्रत्याशित आघात लगा। धोबी को कपड़े धुलने देने का मतलब था कि अतिथि अभी जाना नहीं चाहता। लेखक और उसकी पत्नी उसके जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे। इस आघात का लेखक पर यह प्रभाव पड़ा कि वह अतिथि को राक्षस समझने लगा। इसके लिए तिरस्कार और घृणा की भावना उत्पन्न हो गई। लेखक चाहने लगा कि वह शीघ्र चला जाए।

प्रश्न 4 'संबंधों का संक्रमण के दौर से गुज़रना' –इस पंक्ति से आप क्या समझते हैं? विस्तार से लिखिए ।

उत्तर - 'संबंधों का संक्रमण के दौर से गुज़रना' –इस पंक्ति का आशय है संबंधों में परिवर्तन आना। जो संबंध आत्मीयतापूर्ण थे अब घृणा और तिरस्कार में बदलने लगे। जब लेखक के घर अतिथि आया था तो उसके संबंध सौहार्द पूर्ण थे। उसने उसका स्वागत प्रसन्नता पूर्वक किया था। लेखक ने अपनी ढ़ीली-ढ़ाली आर्थिक स्थिति के बाद भी उसे शानदार डिनर खिलाया और सिनेमा दिखाया। लेकिन अतिथि चार पाँच दिन रुक गया तो स्थिति में बदलाव आने लगा और संबंध बदलने लगे।

प्रश्न 5 जब अतिथि चार दिन तक नहीं गया तो लेखक के व्यवहार में क्या–क्या परिवर्तन आए ?

उत्तर- जब अतिथि चार दिन तक नहीं गया तो लेखक ने उसके साथ मुस्कुराकर बात करना छोड़ दिया, बातचीत के विषय समाप्त हो गए। सौहार्द व्यवहार अब बोरियत में बदल गया। लंच डिनर अब खिचड़ी पर आ गए। इसके बाद लेखक उपवास तक जाने की तैयारी करने लगा। लेखक अतिथि को 'गेट आउट' तक कहने के लिए तैयार हो गया।

प्रश्नोत्तर

स्मृति — लेखक - श्री राम शर्मा

प्रश्न 1 भाई के बुलाने पर घर लौटते समय लेखक के मन में किस बात का डर था ?

उत्तर - लेखक अपने साथियों के साथ झरबेरी के बेर तोड़ रहा था उसी समय गाँव के एक आदमी ने ज़ोर से पुकारकर कहा कि उनका भाई बुला रहा है, जल्दी घर जाओ। इस पर लेखक डर गया कि भाई ने क्यों बुलाया है? उससे क्या कसूर हो गया है? कहीं बेर खाने पर न नाराज़ हों। उसे मार पड़ेगी और इसी पिटने के भय से वह सहमा-सहमा घर पहुँचा।

प्रश्न 2 मक्खनपुर पढ़ने जाने वाली बच्चों की टोली रास्ते में पड़ने वाले कुएँ में ढेला क्यों फेंकती थी ?

उत्तर - बच्चे स्वभाव से नटखट होते हैं। मक्खनपुर पढ़ने जाने के रास्ते में एक सूखा कुआँ था। उसमें एक साँप गिर गया था। अपने नटखट स्वभाव के कारण साँप को तंग करने और उसकी फुसकार सुनने के लिए बच्चे कुएँ में ढेले फेंका करते थे। उसकी आवाज़ सुनने के बाद अपनी आवाज़ की प्रतिध्वनि सुनने की इच्छा उनके मन में रहती थी।

प्रश्न 3 'साँप ने फुसकार मारी या नहीं, ढेला उसे लगा या नहीं, यह बात अब तक स्मरण नहीं' – यह कथन लेखक की किस मनोदशा को स्पष्ट करता है ?

उत्तर - लेखक के साथ यह घटना 1908 में घटी। उसने यह बात अपनी माँ को 1915 में सात साल बाद बताई और लिखा शायद और भी बाद में होगा, इसलिए लेखक ने कहा कि उसे याद नहीं है कि ढेला फेंकने पर साँप को लगा या नहीं, उसने फुसकार मारी या नहीं क्योंकि इस समय लेखक बुरी तरह डर गया था। चिट्ठियाँ कुएँ में गिर गई थी, जिन्हें उनके भाई ने डाकखाने में डालने के लिए दी थी। इससे उसकी घबराहट झलकती है।

प्रश्न 4 किन कारणों से लेखक ने चिट्ठियों को कुएँ से निकालने का निर्णय लिया ?

उत्तर - चिट्ठियाँ लेखक के बड़े भाई ने डाकखाने में डालने के लिए दी थी। लेखक अपने बड़े भाई से बहुत डरते थे। कुएँ में चिट्ठियाँ गिरने से उन्हें अपनी पिटाई का डर था और वह झूठ भी नहीं बोल सकता था। इसलिए भी कि उसे अपने डंडे पर भी पूरा भरोसा था। इन्हीं सब कारणों से लेखक ने कुएँ से चिट्ठियाँ निकालने का निर्णय किया।

प्रश्न 5 साँप का ध्यान बँटाने के लिए लेखक ने क्या–क्या युक्तियाँ अपनाईं ?

उत्तर- साँप का ध्यान बँटाने के लिए लेखक ने कई युक्तियाँ अपनाईं। जैसे - साँप के पास पड़ी चिट्ठियों को उठाने के लिए डंडा बढ़ाया, साँप उस पर कूद पड़ा | इससे डंडा छूट गया लेकिन इससे साँप का आसन बदल गया और लेखक चिट्ठियाँ उठाने में सफल रहा पर डंडा उठाने के लिए उसने कुएँ की बगल से एक मुट्ठी मिट्टी लेकर साँप के दाई ओर फेंकी कि उसका ध्यान उस ओर चला जाए और दूसरे हाथ से डंडा खींच लिया। डंडा बीच में होने से साँप उस पर वार नहीं कर पाया।

प्रश्न 6 कुएँ में उतरकर चिट्ठियों को निकालने संबंधी साहसिक वर्णन को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर - भाई द्वारा दी गई चिट्ठियाँ लेखक से कुएँ में गिर गई थी और उन्हें उठाना भी ज़रुरी था। लेकिन कुएँ में साँप था, जिसके काटने का डर था। परन्तु लेखक ने कुएँ से चिट्ठियाँ निकालने का निर्णय लिया। उसने अपनी और अपने भाई की धोतियाँ कुछ रस्सी मिलाकर बाँधी और धोती की सहायता से वह कुएँ में उतरा। अभी 4-5 गज ऊपर ही था कि साँप फन फैलाए हुए दिखाई दिया। उसने सोचा धोती से लटककर साँप को मारा नहीं जा सकता और डंडा चलाने के लिए पर्याप्त जगह नहीं थी। लेखक ने डंडे से चिट्ठियाँ सरकाने का प्रयत्न किया तो साँप डंडे पर लिपट गया। साँप का पिछला हिस्सा लेखक के हाथ को छू गया तो उसने डंडा पटक दिया। उसका पैर भी दीवार से हट गया और धोती से लटक गया। फिर हिम्मत करके उसने कुएँ की मिट्टी साँप के एक ओर फेंकी। डंडे के गिरने और मिट्टी फेंकने से साँप का आसन बदल गया और लेखक चिट्ठियाँ उठाने में सफल रहा। धीरे से डंडा भी उठा लिया और कुएँ से बाहर आ गया। वास्तव में यह एक साहसिक कार्य था।

प्रश्न 7 इस पाठ को पढ़ने के बाद किन–किन बाल–सुलभ शरारतों के विषय में पता चलता है ?

उत्तर -- इस पाठ को पढ़ने के बाद निम्नलिखित बाल–सुलभ शरारतों के विषय में पता चलता है -

1. मौसम अच्छा होते ही खेतों में जाकर फल तोड़कर खाना।
2. स्कूल जाते समय रास्ते में शरारतें करना।
3. रास्ते में आए कुएँ, तालाब, पानी से भरे स्थानों पर पत्थर फेंकना, पानी में उछलना।
4. जानवरों को तंग करते हुए चलना।

5. अपने आपको सबसे बहादुर समझना आदि अनेक बाल सुलभ शरारतों का पता चलता है।

प्रश्न 8 'मनुष्य का अनुमान और भावी योजनाएँ कभी–कभी कितनी मिथ्या और उल्टी निकलती हैं' –का आशय स्पष्ट कीजिए |

उत्तर - मनुष्य अपनी स्थिति का सामना करने के लिए स्वयं ही अनुमान लगाता है और अपने हिसाब से भावी योजनाएँ भी बनाता है। परन्तु ये अनुमान और योजनाएँ पूरी तरह से ठीक उतरे ऐसा नहीं होता। कई बार यह गलत भी हो जाती हैं। जो मनुष्य चाहता है, उसका उल्टा हो जाता है। अत: कल्पना और वास्तविकता में हमेशा अंतर होता है |

प्रश्न 9 'फल तो किसी दूसरी शक्ति पर निर्भर है' – पाठ के संदर्भ में इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - लेखक जब कुएँ में उतरा तो वह यह सोचकर उतरा था कि या तो वह चिट्ठियाँ उठाने में सफल होगा या साँप द्वारा काट लिया जाएगा। फल की चिंता किए बिना वह कुएँ में उतर गया और अपने दृढ़ विश्वास से सफल रहा। अत: मनुष्य को कर्म करना चाहिए। फल देने वाला ईश्वर होता है। मनचाहा फल मिले या नहीं यह देने वाले की इच्छा पर निर्भर करता है। लेकिन यह भी कहा जाता है, जो दृढ़ विश्वास व निश्चय रखते हैं, ईश्वर उनका साथ देता है।

अपठित गद्यांश

अपठित गद्यांश का अर्थ है - जो पहले पढ़ा न गया हो।

* यह किसी पाठ्यक्रम की पुस्तक में से नहीं लिया जाता है। यह कला, विज्ञान,साहित्य किसी भी विषय का हो सकता है। इनसे संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं। इससे छात्रों का मानसिक व्यायाम होता है, और उनका ज्ञान भी बढ़ता है।

* अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों को हल करने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान अवश्य रखना चाहिए।

१ - दिए गए गद्यांश को ध्यान से पढ़ना चाहिए।

२ - गद्यांश को पढ़ते समय मुख्य बातों को रेखांकित कर देना चाहिए।

३ - प्रश्नों के उत्तर देते समय भाषा एकदम सरल होनी चाहिए।

४ - उत्तर जितना पूछा जाए केवल उतना ही लिखना चाहिए।

५ - यदि गद्यांश का शीर्षक पूछा जाए तो शीर्षक गद्यांश के शुरू या अंत में छिपा रहता है।

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूवक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

साहस का जिंदगी सबसे बड़ी जिंदगी होती है। ऐसी जिंदगी का सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह बिल्कुल निडर, बिल्कुल बेखौफ़ होती है। साहसी मनुष्य का पहला पहचान यह है कि वह इस बात का चिंता नहों करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे म क्या सोच रहे ह। जनमत का उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया का असला ताकत होता है और मनुष्य को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। अड़ोस-पड़ोस को देखकर चलना, यह साधारण जीवन का काम है। क्रांति करने वाले लोग अपने उद्देश्य का तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते ह और न अपनी चाल को हा पड़ोसी का चाल देखकर मद्धिम बनाते ह।

साहसी मनुष्य उन सपनों म भी रस लेता है जिन सपनों का कोई व्यावहारिक अथ नहां है। साहसी मनुष्य सपने उधार नहां लेता, पर वह अपने विचारों म रमा हुआ अपनी ही किताब पढ़ता है। अनाल्ड बेनेट ने एक जगह लिखा है कि जो आदमी यह महसूस करता है कि किसी महान निश्चय के समय वह साहस से काम नहां ले सका, जिंदगी का चुनौती को कबूल नहीं कर सका, वह सुखी नहां हो सकता।

जिंदगी को ठाक से जीना हमेशा हा जोखिम को झेलना है और जो आदमी सकुशल जीने के लिए जोखिम का हर जगह पर एक घेरा डालता है, वह अंततः अपने हा घेरों के बीच कैद हो जाता है और जिंदगी का कोई मज़ा उसे नहां मिल पाता, क्योंकि जोखिम से बचने का कोशिश म, असल म, उसने जिंदगी को हा आने से रोक रखा है। ज़िन्दगी से, अंत में हम उतना हा पाते है जितनी कि उसम पूँजी लगाते ह। पूँजी लगाना जिंदगी के संकटों का सामना करना है, उसके उस पन्ने को उलटकर पढ़ना है

प्रश्नः (1.) साहस का जिंदगी जीने वालों का उन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए जिनके कारण वे दूसरों से अलग नज़र आते ह।

प्रश्नः (2.) गदयांश के आधार पर क्रांति करने वालों तथा जन साधारण म अंतर लिखिए।

प्रश्नः (3.) साहसी मनुष्य सपने उधार नहीं लेता है' का आशय स्पष्ट कीजिए।

प्रश्नः (4.) 'अनाल्ड बेनेट' के अनुसार सुखी होने के लिए क्या-क्या आवश्यक है?

प्रश्नः (5.) जोखिम पर हर जगह घेरा डालने वाला आदमी जिंदगी का मज़ा क्यों नहीं ले सकता?

उत्तर: 1. साहस का जिंदगी जीने वाले निडर और बेखौफ़ होकर जीते ह। वे इस बात का चिंता नहीं करते है कि जनमानस उनके बारे म क्या सोचता है। ये विशेषताएँ उन्ह दूसरों से अलग करती ह।

उत्तर: 2. क्रांति करने वालों का उद्देश्य बिल्कुल हो अलग होता है। वे अपने उद्देश्य का तुलना पड़ोसी से नहीं करते है और पड़ोसी का चाल देखकर अपनी चाल को कम या ज्यादा नहीं करते ह।

उत्तर:3. साहसी मनुष्य सपने उधार नहीं लेता है' का आशय है कि जो साहसी होते ह वे अपने जीवन का लक्ष्य एवं उसे पूरा करने का माग स्वयं चुनते ह। वे दूसरे के लक्ष्य और रास्तों का नकल नहीं करते ह।

उत्तर:4. अनाल्ड बेनेट के अनुसार सुखी होने के लिए—

किसी महान निश्चय के समय साहस से काम लेना आवश्यक है।

ज़िंदगी का चुनौती को स्वीकार करना आवश्यक है।

उत्तर:5. जोखिम पर हर जगह घेरा डालने वाला व्यक्ति जिंदगी का असली मजा इसलिए नहीं ले सकता

क्योंकि जोखिम से बचने के प्रयास म वह जिंदगी को अपने पास आने हो नहीं देता है। इस तरह वह जिंदगी के आनंद से वंचित रह जाता है।

अनौपचारिक पत्र

जिन व्यक्तियों के साथ व्यक्तिगत तथा पारिवारिक संबंध होते हैं, उन्हें लिखे जाने वाले पत्र **अनौपचारिक पत्र** कहलाते हैं। अपने माता-पिता, भाई-बहन, संबंधियों तथा मित्रों को लिखे जाने वाले पत्र अनौपचारिक पत्र होते हैं।

अनौपचारिक पत्र

1. यदि आपको अनौपचारिक पत्र लिखना है तो सबसे पहले सबसे ऊपर बाईं ओर पत्र लिखने वाले का पता लिखें।
2. इसके नीचे दिनांक लिखें।
3. दिनांक लिखने के बाद जिसे पत्र लिखते हैं, उसे संबोधित करें; जैसे-आदरणीय दादा जी, पूजनीया नानी जी, आदरणीय पिता जी, श्रद्धेय ताऊ जी, आदरणीय भैया, प्रिय दीदी, प्यारे भाई तथा प्रिय मित्र आदि।
4. सम्बोधन शब्दों के नीचे सम्मानसूचक शब्द (अभिवादन) लिखें। जैसे-'प्रणाम', 'सादर प्रणाम', 'चरण-स्पर्श', 'नमस्कार', 'आशीर्वाद', 'सुखी रहो', 'प्रसन्न रहो' आदि।
5. पत्र के पहले अनुच्छेद में सामान्य शिष्टाचार के शब्द जैसे-'आप कैसे हैं?' 'यहाँ हम सब सकुशल हैं' आदि लिखें।
6. अगले अनुच्छेद/अनुच्छेदों में विषय को विस्तार दें।
7. अंतिम अनुच्छेद में एक-दो वाक्यों में घर के अन्य सदस्यों के प्रति अभिवादन लिखें।

अनौपचारिक पत्र

8. इसके नीचे बाईं ओर पत्र प्राप्त करने वाले से अपना संबंध लिखें; जैसे-तुम्हारा मित्र, तुम्हारी सखी, आपकी बहन, आपका पुत्र, तुम्हारा भैया, तुम्हारी दीदी, आपकी भतीजी, आपकी भान्जी आदि।
9. इसके नीचे अपना नाम लिखें।
10. परीक्षा की दृष्टि से अपना नाम-पता लिखने के स्थान पर 'परीक्षा भवन, क.ख.ग. तथा xxx लिखें।

11 यदि आप अपने से बड़े संबंधियों जैसे पिता, गुरु और बड़े भाई को पत्र लिख रहे हैं तो प्रशस्ति में पूजनीय, आदरणीय, परमपूज्य आदि लिखें। माता या बहन के लिए लिख रहे हैं तो प्रशस्ति में पूजनीया, आदरणीया या परमपूज्या लिखें। अभिवादन में प्रणाम चरणस्पर्श या नमस्कार लिखें और निवेदन में आपका स्नेहाकांक्षी, आज्ञाकारी, कृपाकांक्षी, अथवा आपका प्यारा पुत्र या भाई लिखें किंतु यदि आप स्त्री हैं तो आपकी स्नेहाकांक्षिणी, आज्ञाकारिणी, कृपाकांक्षिणी अथवा आपकी प्यारी पुत्री या बहन लिखें।

आपके पिता जी ने आपका दाखिला हॉर्सले हिल्स स्कूल, हॉर्सले हिल्स में करवा दिया है। आप वहाँ छात्रावास में रहते हैं। आप अपनी छात्रावासीय दिनचर्या का वर्णन करते हुए अपने दादा जी को पत्र लिखिए।

आइए, अब पत्र को पढ़कर देखते हैं कि पत्र कैसे लिखा गया है और इसमें क्या लिख गया है।

अनुराग,
हार्सले हिल्स स्कूल,
हार्सले हिल्स,
आंध्र प्रदेश-27
दिनांक : 15.4.2010

आदरणीय दादा जी,

सादर चरणस्पर्श।

मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ। आशा है, आप, दादी जी एवं चाची जी भी कुशलपूर्वक होंगे। कुछ दिन पूर्व पिता जी ने मेरा दाखिला यहाँ के हॉर्सले हिल्स स्कूल, में करा दिया है

तथा मैं इस समय छात्रावास में ही निवास कर रहा हूँ। यहाँ किसी प्रकार की परेशानी नहीं है। यहाँ कई छात्र मेरे मित्र भी बन गए हैं।

मेरा अध्ययन व्यवस्थित रूप से चल रहा है। प्रातः साढ़े सात बजे नाश्ता करने के बाद साढ़े आठ बजे स्कूल की कक्षाओं में उपस्थित होना पड़ता है तथा दोपहर डेढ़ बजे हमारी छुट्टी होती है। शाम को हम सब साढ़े तीन बजे से साढ़े पाँच बजे तक बाहर मैदान में खेलते हैं। इसके बाद छात्रावास जाकर नहाते हैं और एक घंटा पढ़ाई करते हैं। शाम को आठ बजे हमें भोजन के लिए मैस में एकत्र होना पड़ता है। वहाँ सब विद्यार्थी एक साथ बैठकर भोजन का आनंद उठाते हैं। भोजन करने के पश्चात दूध भी मिलता है। इसके बाद मैं अपने अध्ययन से जुट जाता हूँ। छात्रावास में रहने से मेरी दिनचर्या बहुत व्यवस्थित हो गई है, जिसे मैं अपने भविष्य के लिए आवश्यक मानता हूँ।

प्रत्येक माह के अंतिम सप्ताह में माता जी और पिता जी मुझसे मिलने आते हैं। अंत में आपको सादर चरणस्पर्श। आप पूजनीया दादी जी एवं चाची जी को मेरा चरण-स्पर्श कहिएगा। पत्र अवश्य लिखते रहिएगा।

आपका प्रिय पौत्र,

अनुराग

अभ्यास - काय

अनौपचारिक पत्र

मित्र को इंटरनेट के प्रयोग से होने वाले लाभ और हानियों पर प्रकाश डालते हुए पत्र लिखिए |

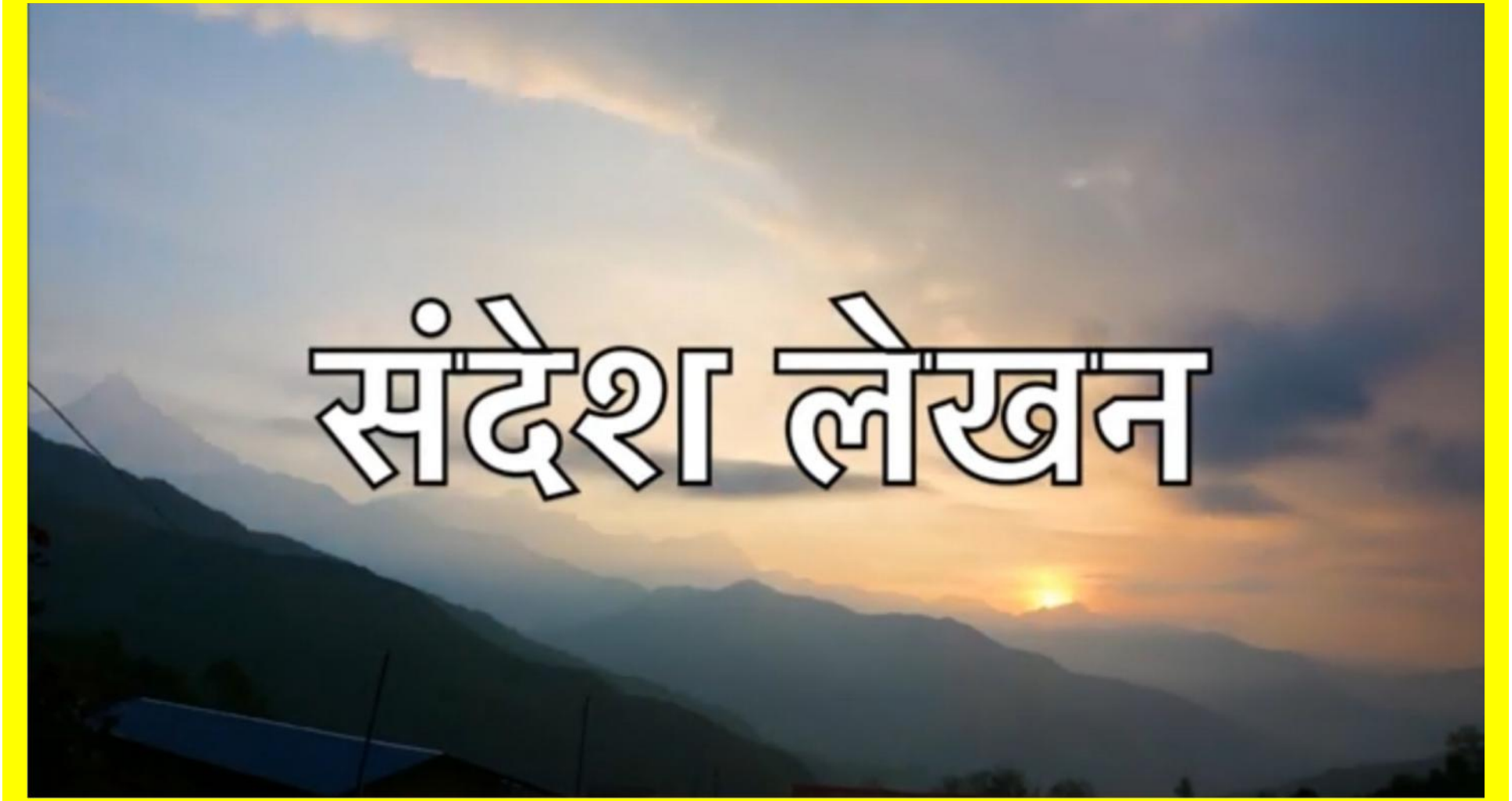
संदेश लेखन

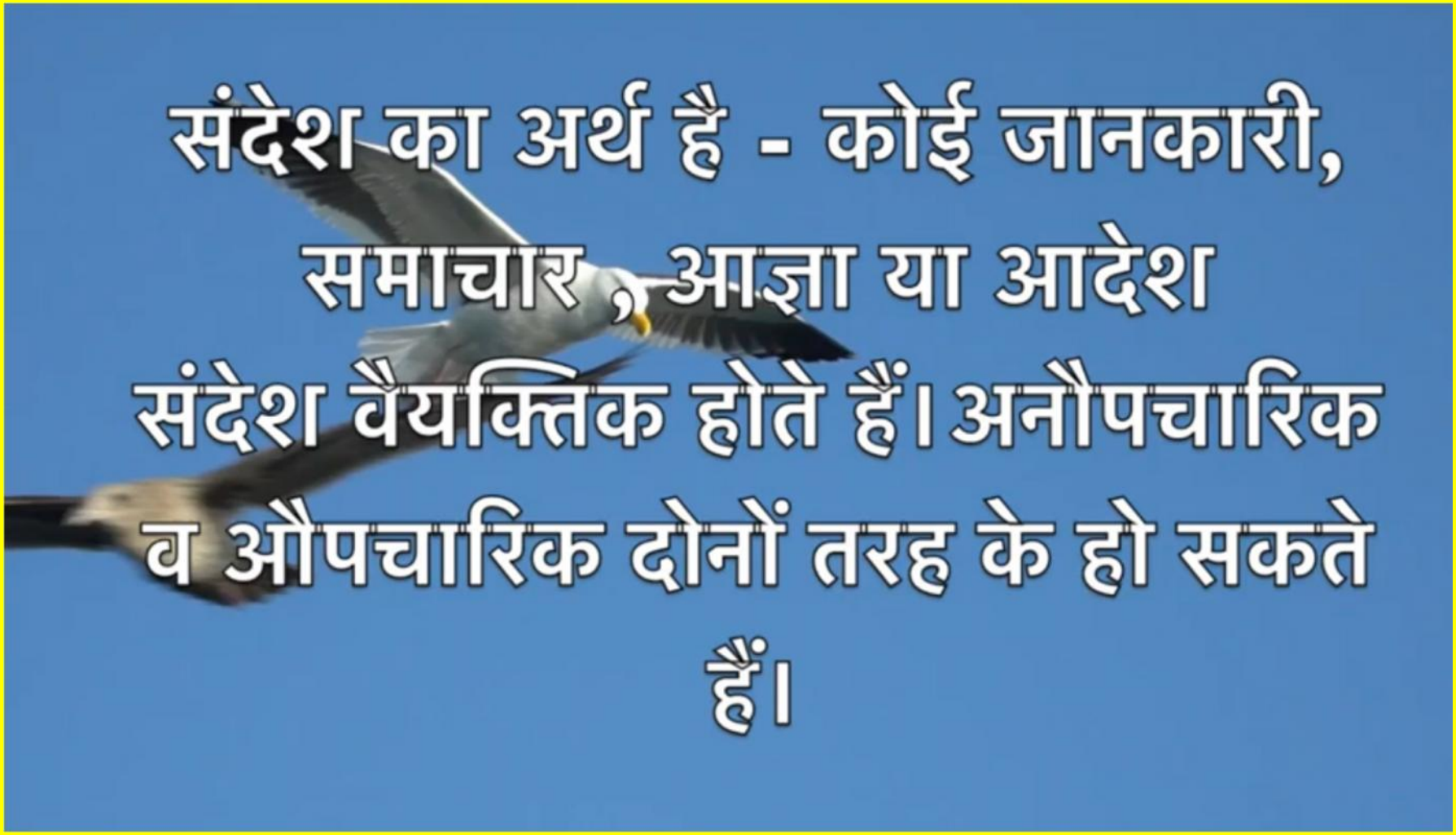
संदेश का अर्थ है - कोई जानकारी,
समाचार , आज्ञा या आदेश
संदेश वैयक्तिक होते हैं। अनौपचारिक
व औपचारिक दोनों तरह के हो सकते
हैं।

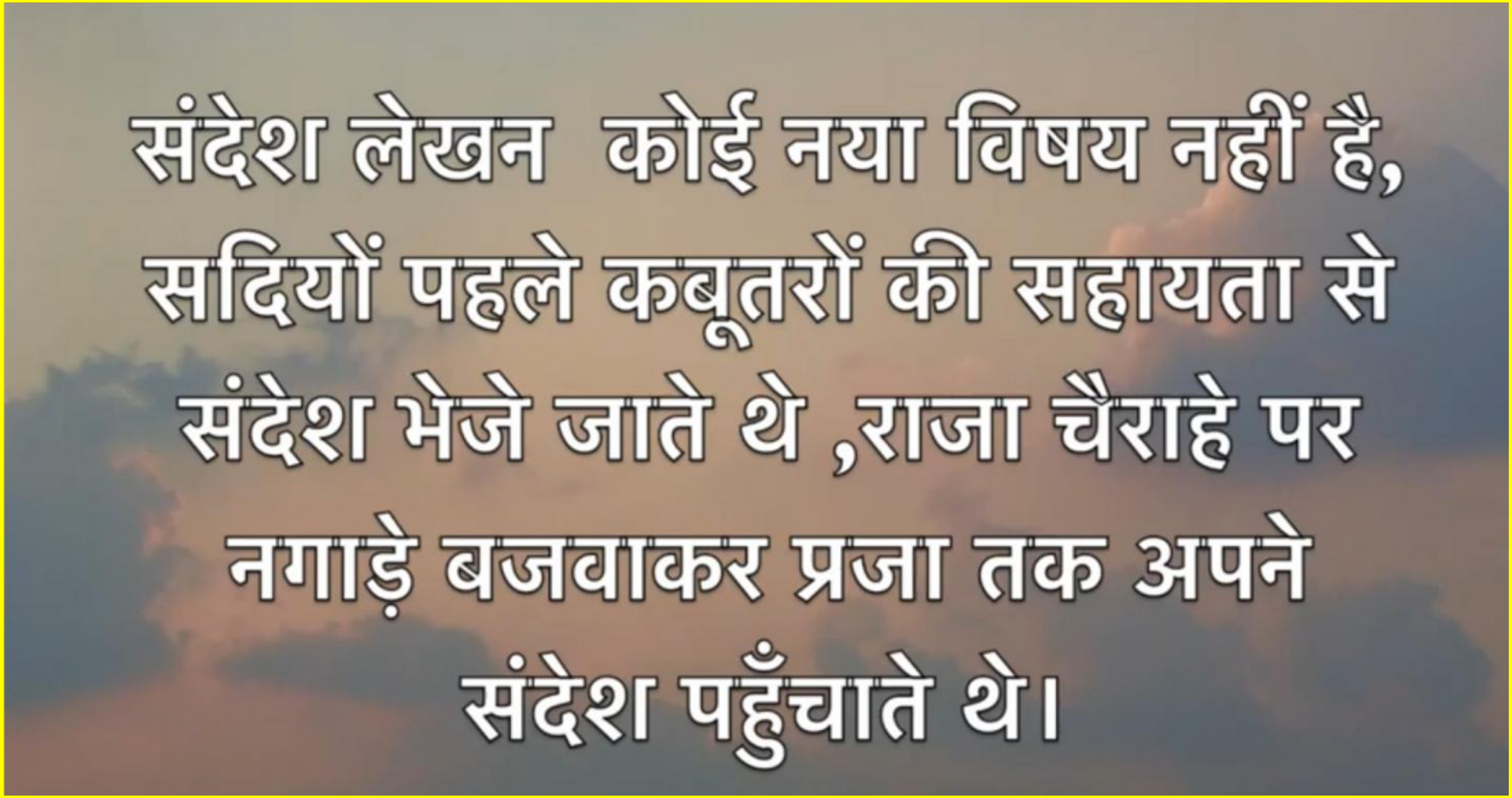
संदेश लेखन कोई नया विषय नहीं है,
सदियों पहले कबूतरों की सहायता से
संदेश भेजे जाते थे ,राजा चैराहे पर
नगाड़े बजवाकर प्रजा तक अपने
संदेश पहुँचाते थे।

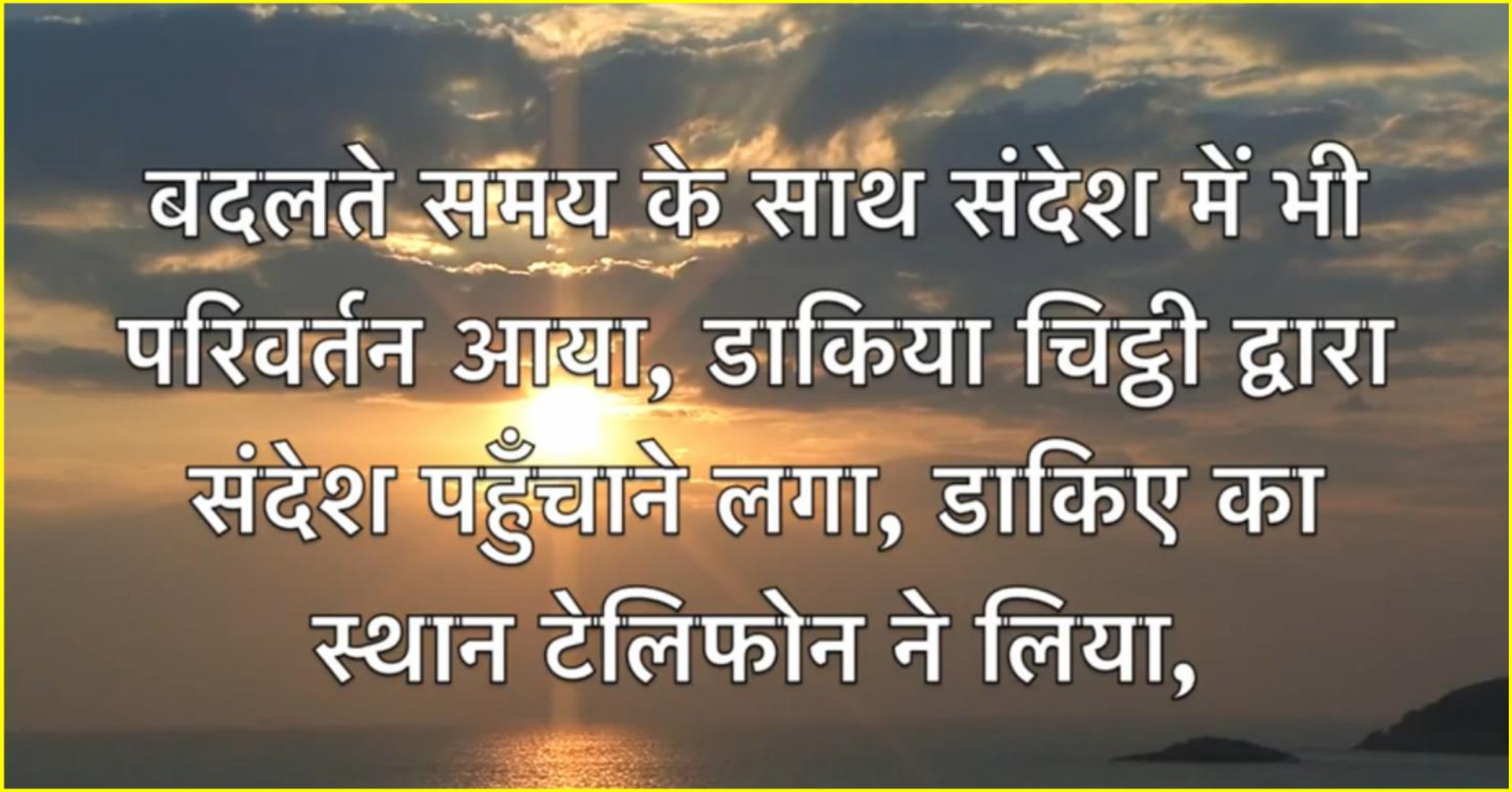
बदलते समय के साथ संदेश में भी
परिवर्तन आया, डाकिया चिट्ठी द्वारा
संदेश पहुँचाने लगा, डाकिए का
स्थान टेलिफोन ने लिया,

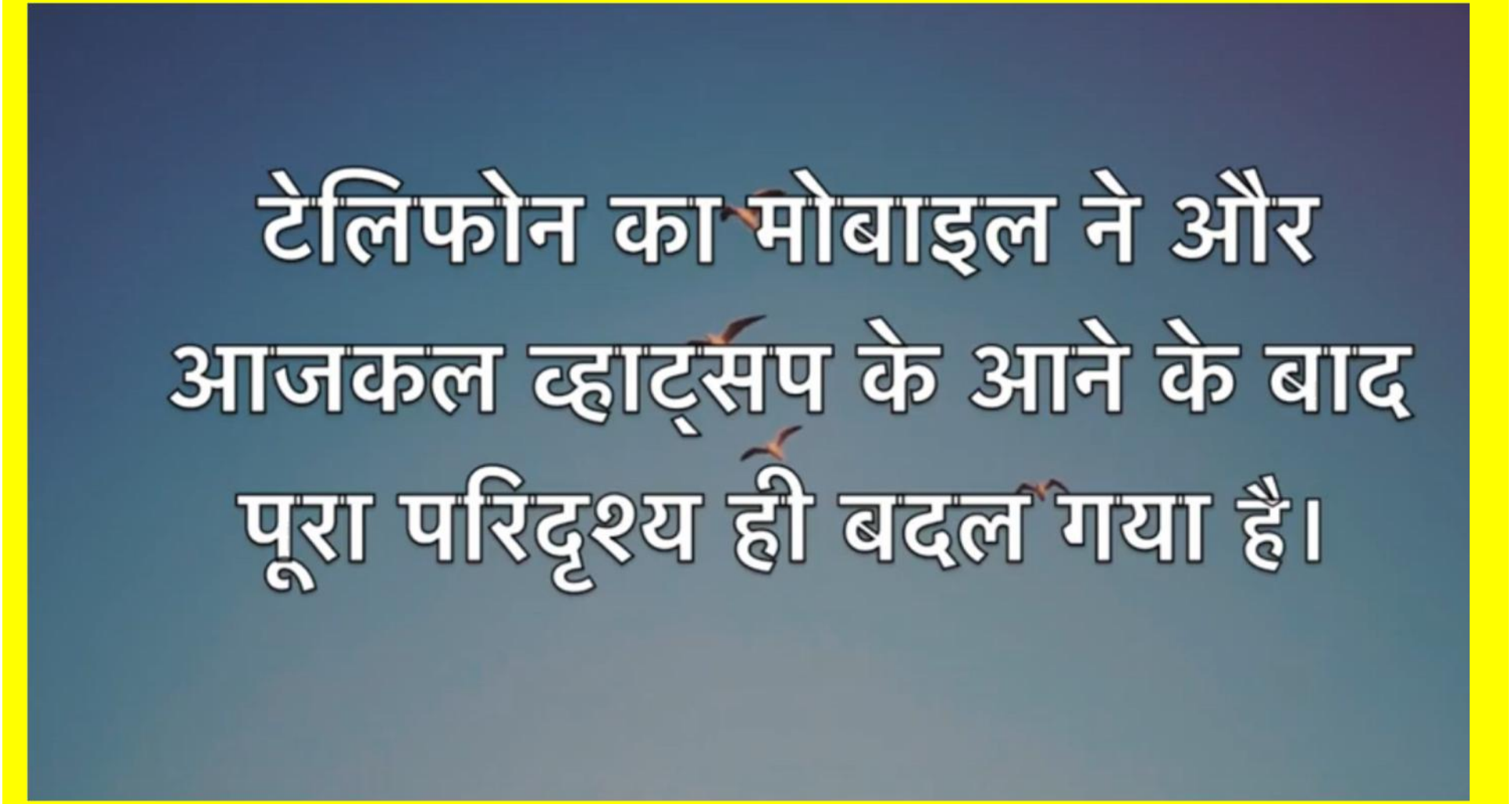
टेलिफोन का मोबाइल ने और
आजकल व्हाट्सप के आने के बाद
पूरा परिदृश्य ही बदल गया है।

Email,
facebook ,whatsapp के
माध्यम से अलग-अलग प्रारूपों में
संदेश भेजे जाते हैं, मुख्य आधार
व्हाट्सएप ही है।

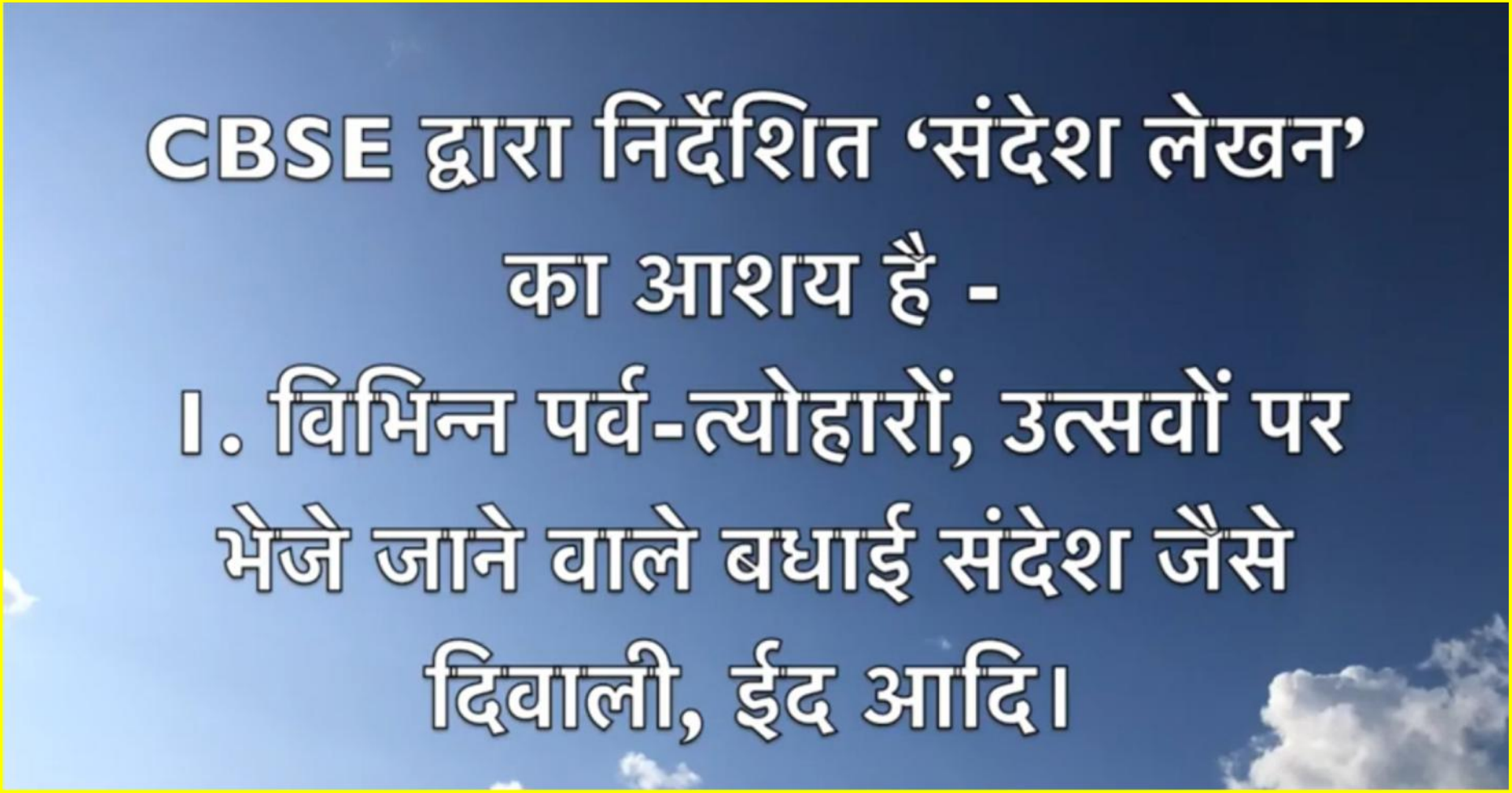
CBSE द्वारा निर्देशित 'संदेश लेखन'
का आशय है -
I. विभिन्न पर्व-त्योहारों, उत्सवों पर
भेजे जाने वाले बधाई संदेश जैसे
दिवाली, ईद आदि।

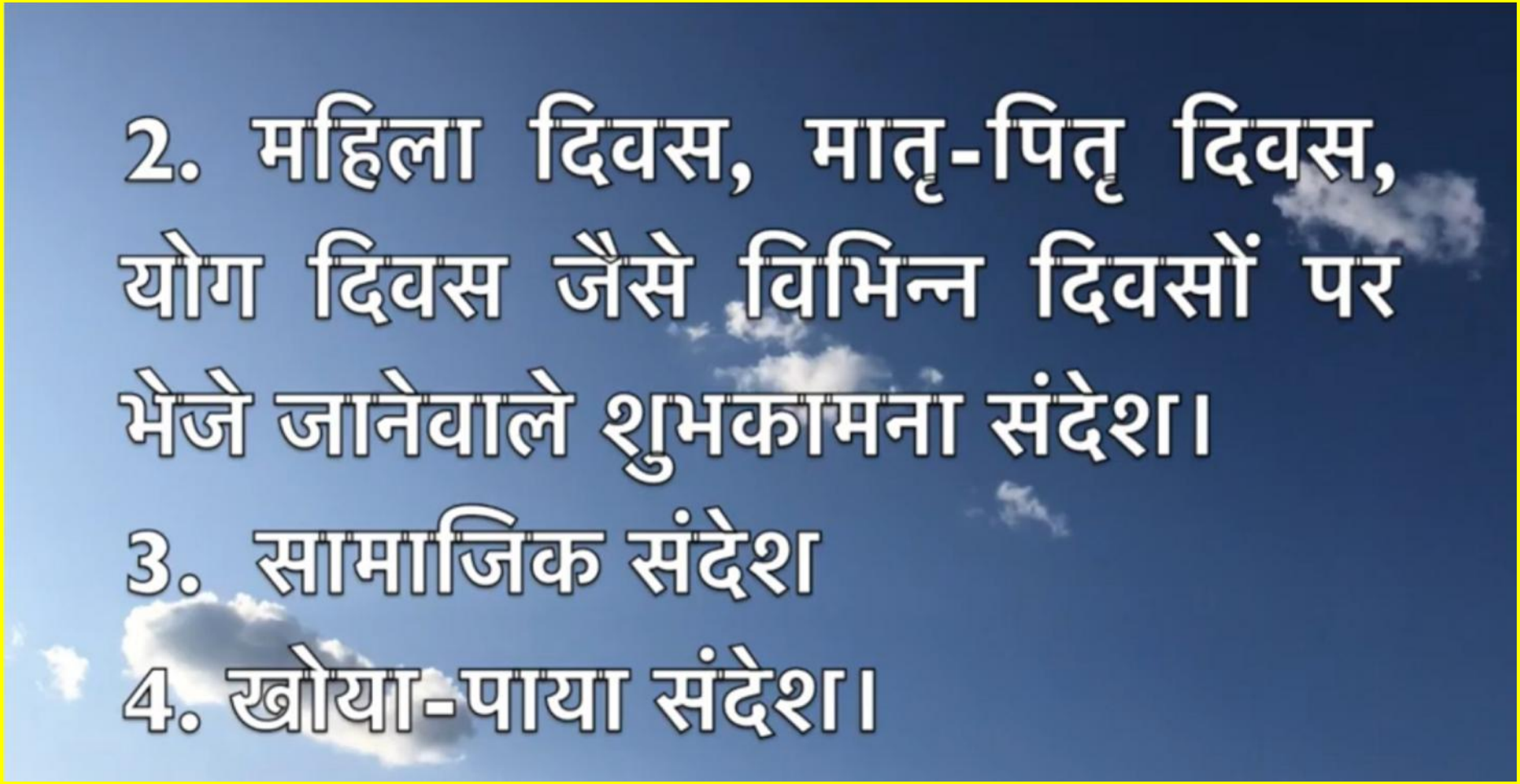

2. महिला दिवस, मातृ-पितृ दिवस, योग दिवस जैसे विभिन्न दिवसों पर भेजे जानेवाले शुभकामना संदेश।

3. सामाजिक संदेश

4. खोया-पाया संदेश।

5.अनुपस्थिति की सूचना, देर से आना, जल्दी पहुँचना, माँ-बाप, भाई-बहन, रिश्तेदारों को भेजे जानेवाले व्यक्तिगत संदेश।

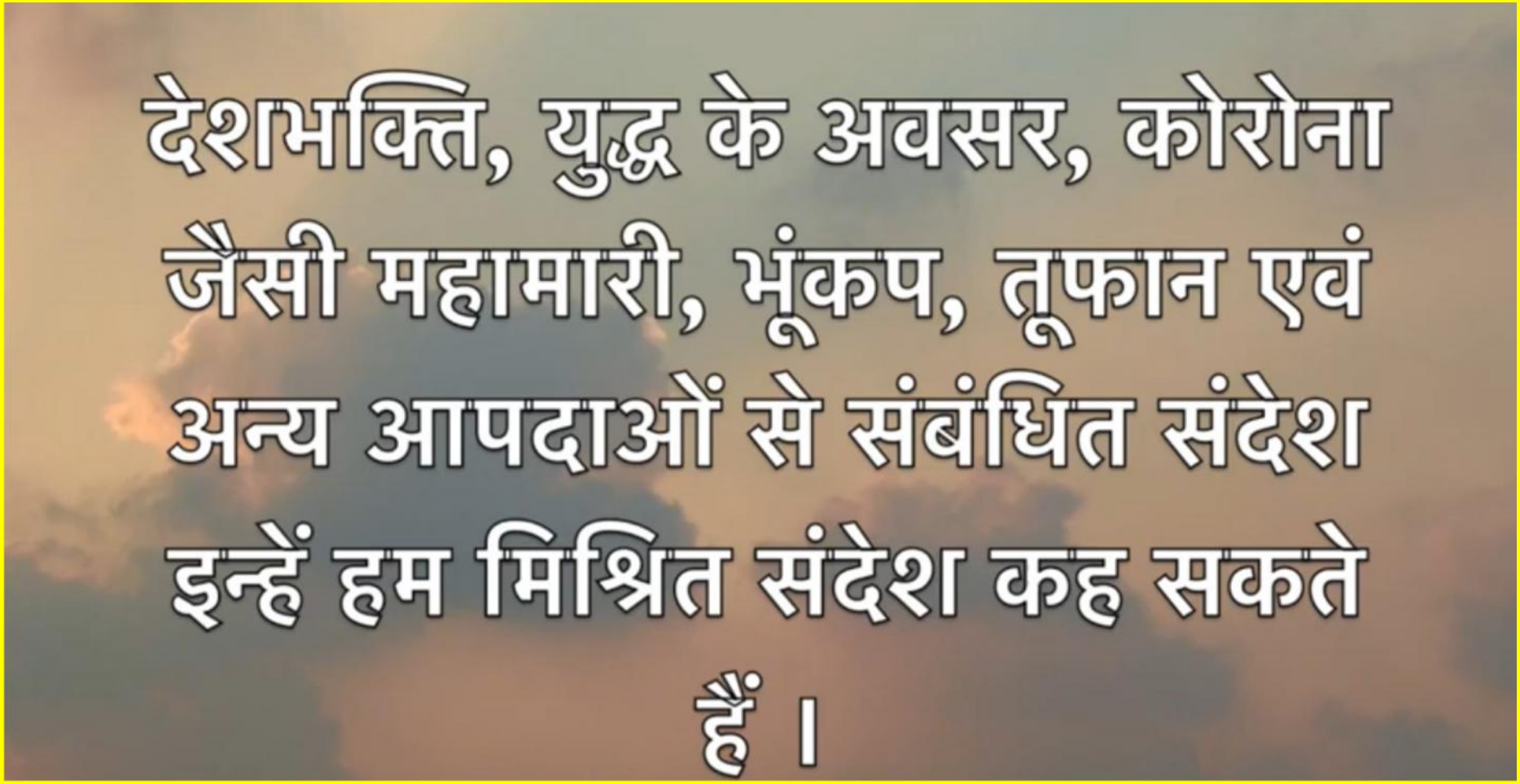
देशभक्ति, युद्ध के अवसर, कोरोना
जैसी महामारी, भूंकप, तूफान एवं
अन्य आपदाओं से संबंधित संदेश
इन्हें हम मिश्रित संदेश कह सकते
हैं ।

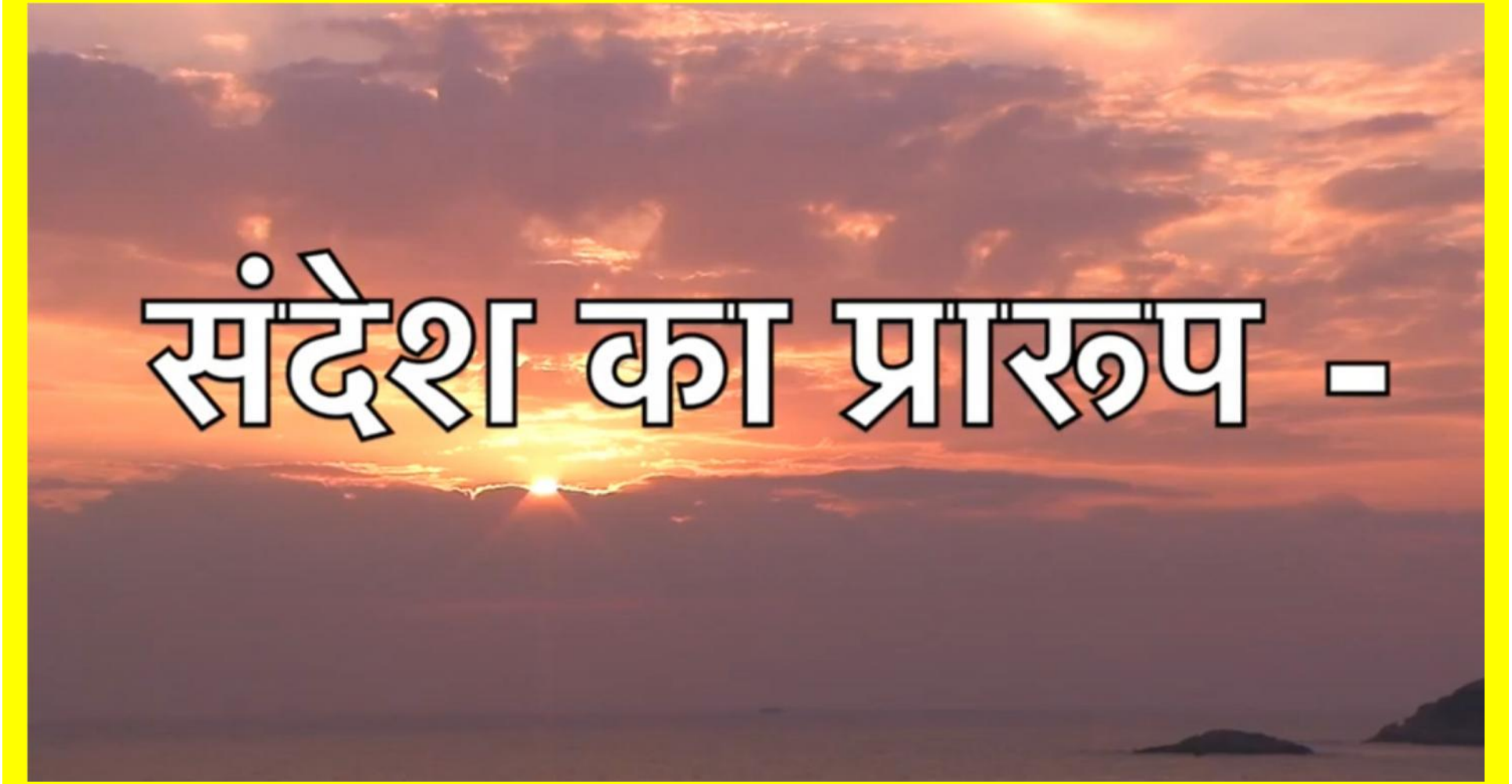
संदेश का प्रारूप -

1.संदेश 30-40 शब्दों में होना चाहिए ।

2.बॉक्स बनाना आवश्यक।

3.तिथि व समय का उल्लेख।

4.संबोधन अर्थात किसके लिए है।

5.लिखनेवाले के नाम के स्थान पर क ख ग लिखना चाहिए।

6.एक ही अनुच्छेद हो।

7.सटीक होना चाहिए।

संदेश

8 नवंबर 2020 रात्रि - 11 बजे

प्रिय मित्रों

कल प्रकाश पर्व दीपावली है। झिलमिल दीपों की रोशनी से प्रकाशित ये दिवाली आपके परिवार में सुख-समृद्धि एवं आरोग्यता लेकर आए। इस पावन पर्व पर मेरे परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

क.ख.ग. परिवार

संदेश

8 नवंबर 2020 रात्रि - 11 बजे

प्रिय भारतवासियों महामारी के इस संकटकाल में मैं आप सभी से निवेदन करूँगा कि अपने -अपने घरों में सुरक्षित रहें। सरकार द्वारा बनाए गए नियमों का पालन करें।केवल ज़रूरत के समय में ही घरों से बाहर निकलें।आशा है इस मुश्किल समय में आप सभी मेरा साथ देंगे। स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें।

नरेंद्र मोदी

अनुच्छेद लेखन

देश-प्रेम

संकेत बिंदु-

- देश-प्रेम कितना आवश्यक
- मनुष्यता का विकास
- हमारा कर्तव्य

अपने समाज, जन्मभूमि और देश के प्रति अच्छी भावनाएँ रखना, इसके प्रति लगाव रखना और प्रेम करने का नाम देश-प्रेम है। जिस पेड़ पर पक्षी अपना बसेरा बना लेता है उससे उसे विशेष लगाव-सा हो जाता है। यही कारण है कि दिन भर वही कहीं भी रहे पर शाम को अवश्य लौट आता है। इसी प्रकार मनुष्य जहाँ जन्म लेता है, पलता-बढ़ता है, जिसकी रज में लौटकर बड़ा होता है वहाँ से उसका लगाव रखना स्वाभाविक ही है। अपने देश के लिए आवश्यकता पड़ने पर सर्वस्व न्योछावर कर देना चाहिए। देश-प्रेम मनुष्यता का विकास करता है।

इसी के वशीभूत होकर व्यक्ति देश के लिए मरने-मिटने को तैयार रहता है। यह मानव की उच्च कोटि की भावना है। देश प्रेम के कारण ही आज़ाद, भगत सिंह बिस्मिल जैसे हज़ारों क्रांतिकारी वीर अपना बलिदान देकर अमर हो गए। देश की आन-बान और शान पर आँच आने पर हमारा खून खौल जाना चाहिए और हमें ऐसी स्थिति में मरने-मिटने को तैयार रहना चाहिए।

एक फूल की चाह — कवि - सियारामशरण गुप्त

प्रश्न 1 बीमार बच्ची ने क्या इच्छा प्रकट की ?

उत्तर - बीमार बच्ची ने अपने पिता से कहा कि मुझे देवी माँ के प्रसाद का एक फूल लाकर दे दो।

प्रश्न 2 सुखिया के पिता पर कौन-सा आरोप लगाकर उसे दंडित किया गया ?

उत्तर -सुखिया के पिता पर यह आरोप लगाया गया कि उसने मंदिर में धोखे से प्रवेश करके भारी अनर्थ किया है। उसके कारण मंदिर की चिरकालिक पवित्रता कलुषित हो गई है। इससे देवी का महान अपमान हुआ है। अतः उसे सात दिन के कारावास का दंड देकर दंडित किया गया ।

प्रश्न 3 जेल से छूटने के बाद सुखिया के पिता ने अपनी बच्ची को किस रूप में पाया ?

उत्तर - जब सुखिया का पिता जेल से छूटकर घर पहुँचा, तब वहाँ उसने बच्ची को नहीं पाया। उसे पता चला कि उसके परिवारजन उसे मरघट ले जा चुके हैं। वहाँ जाकर उसने देखा कि लोग सुखिया का दाह संस्कार कर चुके हैं। उसने वहाँ अपनी बच्ची को राख की ढेरी के रूप में पाया।

प्रश्न 4 'एक फूल की चाह' कविता का केंद्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर - इस कविता का केंद्रीय भाव यह है कि छुआछूत मानवता के नाम पर कलंक है और इसे शीघ्र ही समाप्त किया जाए। जन्म के आधार पर किसी को अछूत मानना एक अपराध है। मंदिर जैसे पवित्र स्थानों पर अछूत होने पर किसी के प्रवेश पर रोक लगाना सर्वथा अनुचित है। कवि चाहता है कि इस प्रकार की सामाजिक विषमता का शीघ्र अंत हो। सभी को सामाजिक एवं धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त हो |

शशि खरबंदा

वीडियो

शशि खरबंदा

संवाद-लेखन

दो व्यक्तियों या इससे भी अधिक लोगों के बीच हुई बातचीत को संवाद या वार्तालाप कहते हैं। व्यक्तियों के बातचीत का ढंग अलग-अलग होता है। उनके संवाद उन्हीं के अनुसार लिखना ही संवाद-लेखन कहलाता है।

संवाद–लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें।

(1) संवाद छोटे, सहज तथा स्वाभाविक होने चाहिए।

(2) संवादों में रोचकता एवं सरसता होनी चाहिए।

(3) इनकी भाषा सरल, स्वाभाविक और बोलचाल के निकट हो। उसमें बहुत अधिक कठिन शब्द तथा अप्रचलित (जिन शब्दों का प्रयोग कोई न करता हो) शब्दों का प्रयोग न हो।

(4) संवाद पात्रों की सामाजिक स्थिति के अनुकूल होने चाहिए। अनपढ़ या ग्रामीण पात्रों और शिक्षित पात्रों के संवादों में अंतर रहना चाहिए।

(5) संवाद जिस विषय या स्थिति के विषय में हों, उस विषय को स्पष्ट करने वाले होने चाहिए अर्थात जब कोई उस संवाद को पढ़े तो उसे ज्ञात हो जाना चाहिए की उस संवाद का विषय क्या है।

(6) प्रसंग के अनुसार संवादों में व्यंग्य-विनोद (हँसी-मजाक) का समावेश भी होना चाहिए।

(7) यथास्थान मुहावरों तथा लोकोक्तियों के प्रयोग करना चाहिए इससे संवादों में सजीवता आ जाती है। और संवाद प्रभावशाली लगते हैं।

(8) संवाद बोलने वाले का नाम संवादों के आगे लिखा होना चाहिए।

(9) यदि संवादों के बीच कोई चित्र बदलता है या किसी नए व्यक्ति का आगमन होता है, तो उसका वर्णन कोष्टक में करना चाहिए।

(10) संवाद बोलते समय जो भाव वक्ता के चेहरे पर हैं, उन्हें भी कोष्टक में लिखना चाहिए।

(11) यदि संवाद बहुत लम्बे चलते हैं और बीच में जगह बदलती हैं, तो उसे दृश्य एक, दृश्य दो करके बांटना चाहिए।

(12) संवाद लेखन के अंत में वार्ता पूरी हो जानी चाहिए।

शशि खरबंदा

अच्छे संवाद-लेखन की विशेषताएँ -

(1) संवाद में प्रवाह, क्रम और तर्कसम्मत (अर्थपूर्ण) विचार होना चाहिए।

(2) संवाद देश, काल, व्यक्ति और विषय के अनुसार लिखा होना चाहिए।

(3) संवाद सरल भाषा में लिखा होना चाहिए।

(4) संवाद में जीवन की जितनी अधिक स्वाभाविकता होगी, वह उतना ही अधिक सजीव, रोचक और मनोरंजक होगा।

(5) संवाद का आरम्भ और अन्त रोचक हो।

इन सभी विशेषताओं को ध्यान में रखकर छात्रों को संवाद लिखने का अभ्यास करना चाहिए। इससे उनमें अर्थों को समझने और सर्जनात्मक शक्ति को जागरित करने का अवसर मिलता है। उनमें बोलचाल की भाषा लिखने की प्रवृति जगती है।

पिता और पुत्र के बीच संवाद

पुत्र – पिता जी, मुझे दस रुपए चाहिए।

पिता – दस रुपए का क्या करोगे, बेटा?

पुत्र – मेरे मित्र का जन्मदिन है। मैं उसे एक पुस्तक दूँगा।

पिता – पुस्तक ही क्यों? कुछ और क्यों नहीं?

पुत्र – पिता जी, उसे पुस्तकें पढ़ने का बहुत शौक है। मैं उसे कहानियों की अच्छी-सी पुस्तक दूँगा।

पिता – तब तो ठीक है।

शशि खरबंदा

अभ्यास कार्य

दो मित्रों के बीच
वार्षिकोत्सव
पर संवाद
लेखन

शशि खरबंदा

पर्यायवाची शब्द

बहुत तेज वर्षा हो रही है।
हाँ बारिश बहुत तेज हो रही है।
वर्षा = बारिश
एक ही अर्थ

सूर्य निकल आया है।

सूरज निकल आया है।

बगीचे में फूल खिले हैं।

बगीचे में पुष्प खिले हैं।

अनिल मेरा दोस्त है।

अनिल मेरा मित्र है।

आज पाठशाला की छुट्टी है।

आज विद्यालय की छुट्टी है।

सूर्य	=	सूरज
फूल	=	पुष्प
दोस्त	=	मित्र
पाठशाला	=	विद्यालय

पर्यायवाची शब्द

एक जैसा अर्थ प्रकट करने वाले शब्द

पर्यायवाची

सुबह सवेरा प्रातः

वर्षा बारिश बरसात

स्त्री औरत महिला

सागर समुद्र सिंधु

हाथी हस्ती गज

चंद्रमा चाँद शशि

पानी जल नीर

पृथ्वी धरती धरा

प्रभु ईश्वर भगवान

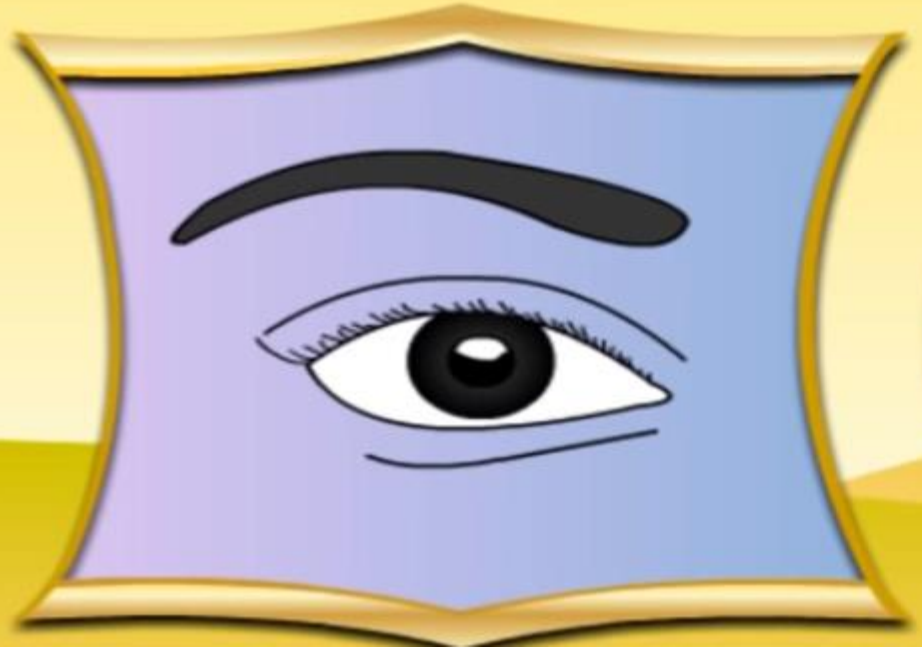

आँख नेत्र नयन

हवा पवन वायु

पहाड़ पर्वत शैल

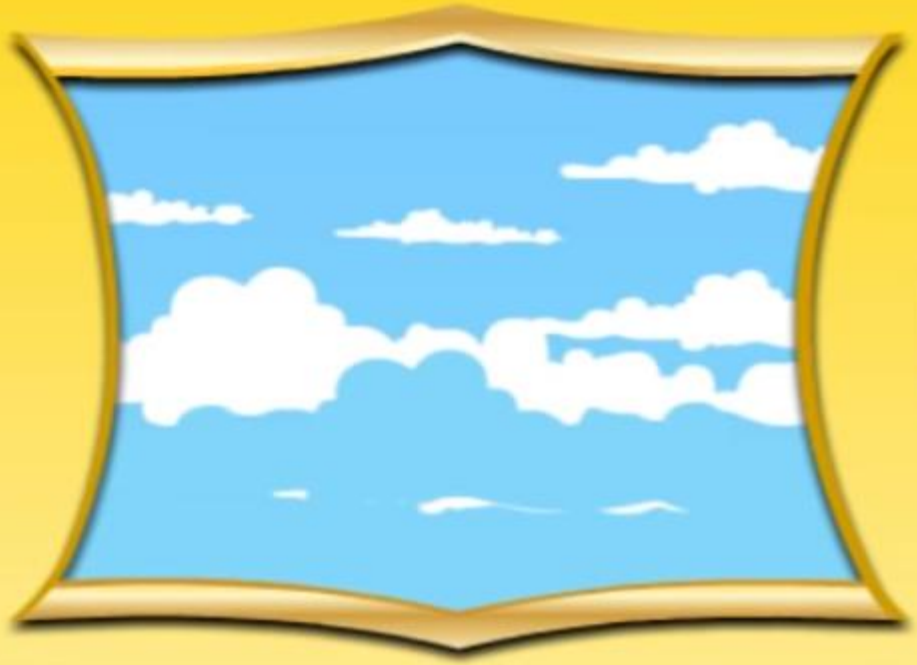

बादल मेघ घन

बगीचा वाटिका उपवन

जंगल वन कानन

माता माँ मैया

संसार जग जगत

कमल पंकज जलज

निम्नलिखित शब्दों के दो - दो पर्यायवाची शब्द लिखिए : -

ईमान - सच्चाई , धर्म , ज़मीर

बदन - शरीर , देह , काया

अंदाजा - अनुमान , आंकलन

बैचनी - व्याकुलता , अकुलाहट , आकुलता

गम - दुख , पीड़ा ,शोक

दर्जा - श्रेणी , पदवी

ज़मीन - धरती , धरा , पृथ्वी

ज़माना - युग , समय , काल

बरकत - उन्नति , वृद्धि , लाभ

जलाशय - तालाब , सरोवर , पोखर , सर

Shrutisam bhinnarthak Shabd - श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

Shrutisam bhinnarthak Shabd - श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द
श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द
श्रुति = सुनना
सम = समान
भिन्न = अलग

Shrutisam bhinnarthak Shabd - श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

वे शब्द जो सुनने तथा लिखने में लगभग समान लगते हैं किंतु उनके अर्थ बहुत भिन्न होते हैं, श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं।

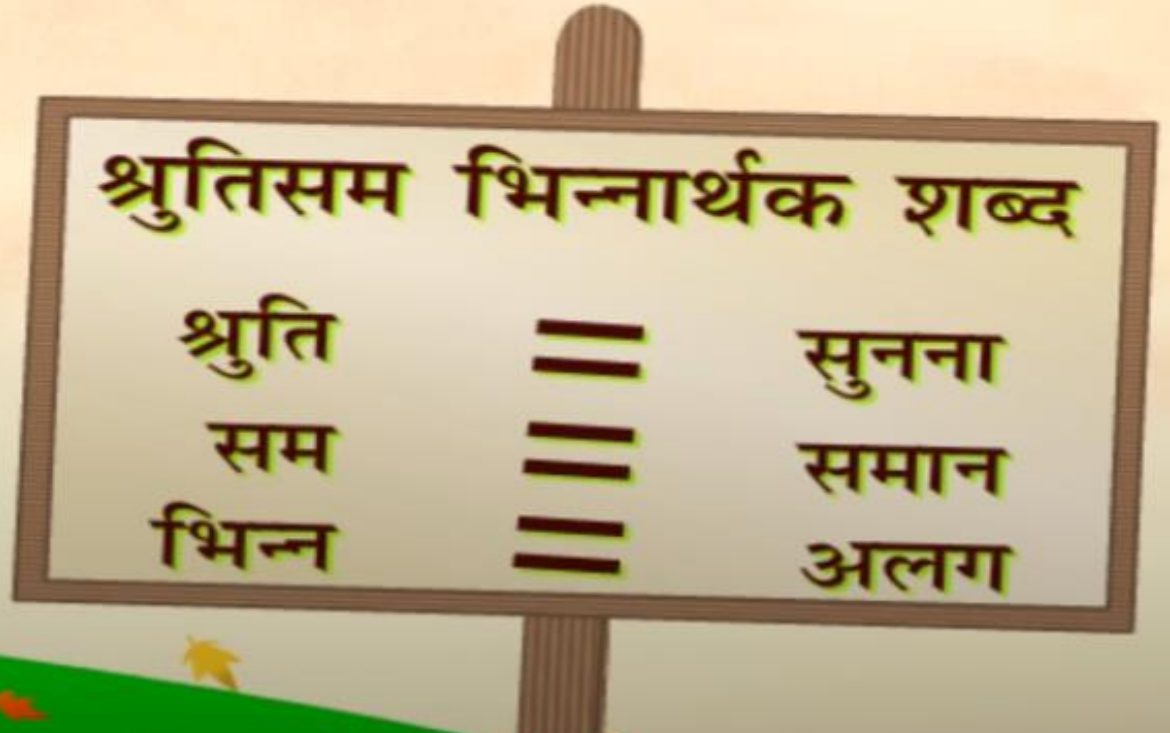

Shrutisam bhinnarthak Shabd - श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

पत्ता

पता

Shrutisam bhinnarthak Shabd - श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

पत्ता

किसी पेड़-पौधे का पत्ता

पता

किसी का रहने का स्थान

भिन्न अर्थ

सुनने में समान

शब्द	अर्थ
उतर	ऊँचे स्थान से नीचे आना
उत्तर	एक दिशा, जवाब
पता	किसी का रहने का स्थान
पत्ता	किसी पेड़-पौधे का पत्ता
पूछ	पूछना
पूँछ	किसी पशु की दुम
बाग	बगीचा, उपवन
बाघ	एक पशु

sam bhinnarthak Shabd - श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

शब्द	अर्थ
समान	बराबर
सामान	सामग्री या पदार्थ
पवन	वायु
पावन	पवित्र
हँस	हँसना
हंस	एक पक्षी
दिन	दिवस
दीन	गरीब

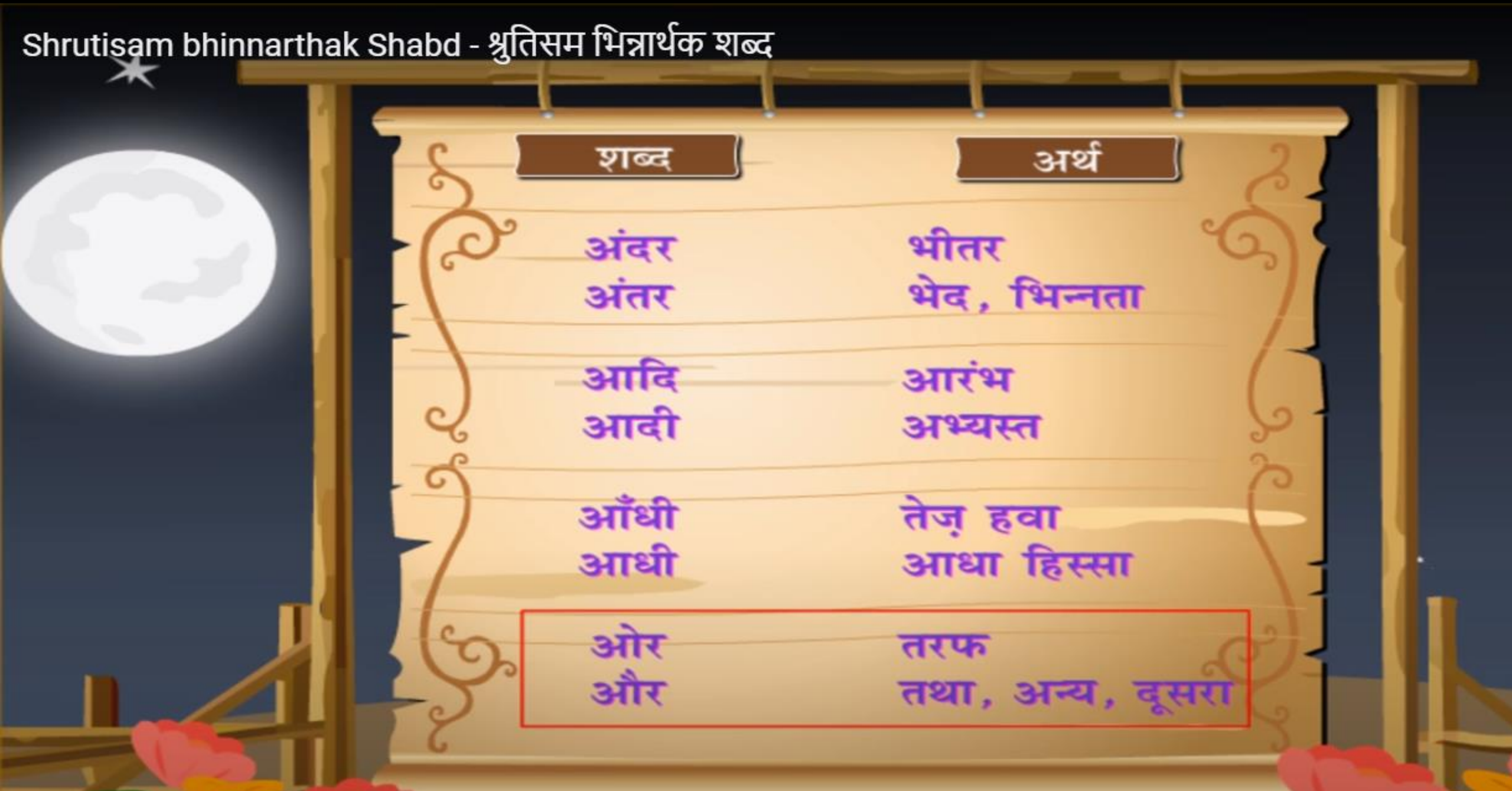

Shrutisam bhinnarthak Shabd - श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

शब्द	अर्थ
अंदर	भीतर
अंतर	भेद, भिन्नता
आदि	आरंभ
आदी	अभ्यस्त
आँधी	तेज़ हवा
आधी	आधा हिस्सा
ओर	तरफ
और	तथा, अन्य, दूसरा

Shrutisam bhinnarthak Shabd - श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

शब्द	अर्थ
कढ़ाई	सूई-धागे से कपड़े पर फूल-पत्ती बनाना
कड़ाही	खाना बनाने का बरतन
परिमाण	मात्रा, नाप-तौल
परिणाम	नतीजा, फल
अचार	आम-नीबू आदि का अचार
आचार	आचरण, चाल-चलन

शब्द	अर्थ
मेला	त्योहार पर लगा बाजार
मैला	गंदा
पीट	पीटना
पीठ	शरीर का अंग

Samrupi Bhinnarthak Shabd | Hindi Vyakaran | Learning App

समरूपी भिन्नार्थक शब्द

ध्यानपूर्वक देखिए, पढ़िए और समझिए–

हमें दीन व्यक्ति की सहायता करनी चाहिए।

दिन में बहुत ठंड थी।

किरण निश्चिंत होकर सो रही थी।

रोमा ने निश्चित समय पर कार्य पूरा किया।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयोग किए गए रंगीन शब्दों को ध्यान से देखिए। ये शब्द देखने तथा बोलने में लगभग समान लगते हैं, किंतु इनके अर्थ अलग-अलग होते हैं

Samrupi Bhinnarthak Shabd | Hindi Vyakaran | Learning App

समरूपी भिन्नार्थक शब्द

VISI Net ISO - 9001-2008

ध्यानपूर्वक देखिए, पढ़िए और समझिए–

हमें दीन व्यक्ति की सहायता करनी चाहिए।

दिन में बहुत ठंड थी।

किरण निश्चिंत होकर सो रही थी।

रोमा ने निश्चित समय पर कार्य पूरा किया।

दिन– दिवस

दीन– गरीब

निश्चित– तय/पक्का किया गया

निश्चिंत– चिंता के बिना (चिंता रहित)

Exit fu

Samrupi Bhinnarthak Shabd | Hindi Vyakaran | Learning App

समरूपी-भिन्नार्थक शब्द

कुछ प्रमुख समरूपी-भिन्नार्थक शब्द हैं–

दिशा	तरफ़	आदि	आरंभ
दशा	हालत	आदी	अभ्यस्त
सुत	बेटा	इस्त्री	प्रेस
सूत	धागा	स्त्री	नारी
अश्व	घोड़ा	नीर	जल
अश्म	पत्थर	नीड़	घोंसला
कुल	वंश	ओर	तरफ़
कूल	किनारा	और	तथा
तरंग	लहर	कपट	धोखा
तुरंग	घोड़ा	कपाट	दरवाजा
अलि	भौंरा	शाम	संध्या
अली	सखी	श्याम	काला

mrupi Bhinnarthak Shabd | Hindi Vyakaran | Learning App

समरूपी भिन्नार्थक शब्द

VISI Net ISO 9001:2008

कुछ प्रमुख समरूपी-भिन्नार्थक शब्द हैं–

समान	बराबर	ग्रह	नक्षत्र
सामान	वस्तु	गृह	घर
प्रमाण	सबूत	निधन	मृत्यु
प्रणाम	नमस्कार	निर्धन	गरीब
कड़ाई	सख़्ती	बेल	लता
कढ़ाई	एक बर्तन	बैल	पशु
अन्न	अनाज	चालक	वाहन चलाने वाला
अन्य	दूसरा	चालाक	चतुर
अनल	आग	पता	स्थान की जानकारी
अनिल	हवा	पत्ता	पेड़ का पत्ता
कोष	खजाना	बाग	फलदार वृक्षों का समूह
कोश	शब्दकोश	बाघ	एक जंगली पशु

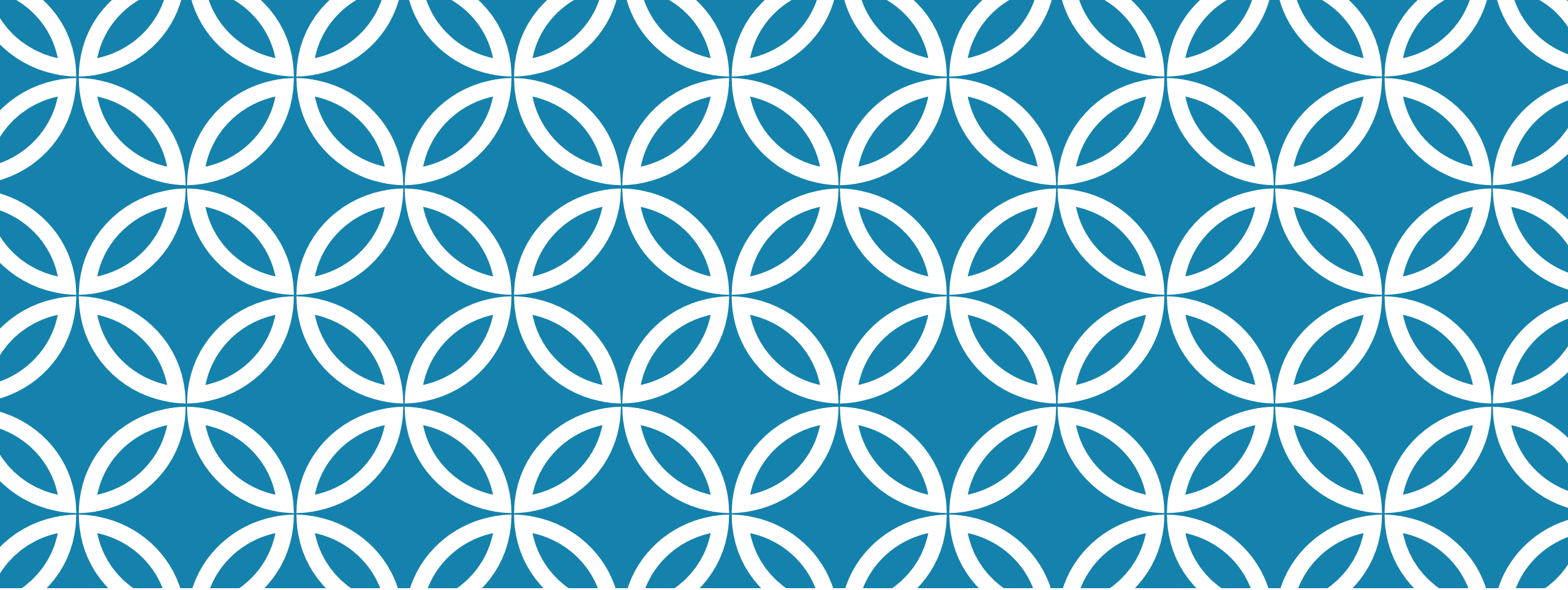

धन्यवाद

om shabd - विलोम शब्द
विलोम
शब्द

दिन

रात

हँसना

रोना

मोटा

पतला

उलटा अर्थ बताने वाले शब्द — विलोम

दिन	रात
हँसना	रोना
मोटा	पतला

एक दूसरे से उलटा अर्थ देने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं।

बड़ा

छोटा

बड़ा

छोटा

अंदर

बाहर

बहादुर

कायर

साफ

गंदा

आना

जाना

साफ

गंदा

दोस्त

दुश्मन

चढ़ना

उतरना

बंद

खुला

चढ़ना

उतरना

दूर

पास

अमीर

गरीब

पूर्व	पश्चिम
अमीर	गरीब
असली	नकली

आसमान
धरती
खरीदना
बेचना
सुबह
शाम
आसमान
धरती

ऊँचा

नीचा

एक	अनेक
मेहनती	आलसी
ऊँचा	नीचा

हलका

भारी

पुराना	नया
कम	ज्यादा
हलका	भारी

अँधेरा

उजाला

ऊपर	नीचे
निडर	डरपोक
अँधेरा	उजाला

कच्चा

पक्का

काला	सफ़ेद
मालिक	नौकर
कच्चा	पक्का

जीत

हार

लाभ — हानि

ताज़ा — बासी

जीत — हार

निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए |

(i) **अनुकूल --**

(ii) **नियमित --**

(iii) **सुंदर ---**

(iv) **निश्चित** –

(v) **आरोही** –

(vi) **विख्यात** –

(vii) **आकर्षण** –

(viii) **अस्थायी --**

(ix) **सशक्त** –

(x) **स्वाधीनता --**